पिच्छिका मोर पंख की ही क्यों

05

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 30 अंक 02 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 20 नवम्बर 2023, वीर नि. संवत् 2550

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

चन्द्रगिरि में हुआ पिच्छिका परिवर्तन

देश मे बड़े-बड़े आयोजन को रचने में लोग वर्ष, कई महीनों या सप्ताह पहले तो योजना बनाते ही हैं लेकिन धन्य है हमारे महाश्रेष्ठ अनियतविहारी आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महाराज। आचार्य श्री के सानिध्य में हर आयोजन चतुर्थकाल का रूप ले लेता है, ऐसा ही कुछ हुआ चंद्रगिरि तीर्थ डोंगरगढ़ जी में। चंद्रगिरी से 14 नवम्बर 2023 को आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ के पिच्छिका परिवर्तन की खबर मिली और 15 नवम्बर को प्रातःकाल पिच्छिका परिवर्तन सानंद सम्पन्न भी हो गया। पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को नवीन पिच्छिका प्रदाता व पुरानी पिच्छी प्राप्तकर्ता रहे श्री चंद्रकान्त श्रीमती विनिता जैन राजनांदगाव महामंत्री चंद्रगिरी तीर्थक्षेत्र।

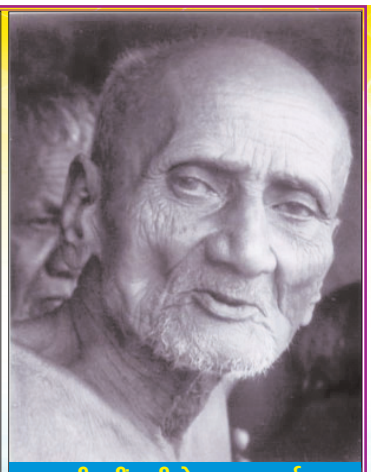

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

उदयपुर में सम्पन्न हुआ आचार्य श्री वर्धमान सागर जी सहित 32 साधुओं का पीछी परिवर्तन समारोह

राजेश पंचोलिया, इंदौर

उदयपुर, 16 नवम्बर। दिगंबर जैन साधु का संयम उपकरण पीछी और कमंडल है। यह जिन मुद्रा एवं करुणा का प्रतीक है, पीछी और कमंडल साधु के स्वालंबन के दो हाथ है, इनके बिना अहिंसामय महाव्रत का पालन नहीं हो सकता। आदान निक्षेपण समिति तथा प्रतिस्थापना समिति का पालन नहीं कर सकते। इस कारण समस्त दिगंबर साधु वर्ष में एक बार पीछी का परिवर्तन करते हैं। आचार्य श्री ने पीछी के गुण में बताया कि यह धूल ग्रहण नहीं करती, लघुता रहती है, पसीना ग्रहण नहीं करती, सुकुमार झुकने वाली होती है। यहां तक भी देखा गया है कि मोर पंख यदि आंखों में लग जाए तो बहुत चुभता नहीं है, इससे आंसू नहीं, आते कष्ट नहीं होता। सबसे बड़ी बात यह है कि मयूर स्वयं पंख छोड़ते है, इस कारण कोई हिंसा भी नहीं होती। आज पीछी कमंडल रूपी संयम रथ निरंतर चल रहा है, इसका श्रेय प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांति सागर जी महाराज को है। यह मंगल देशना आचार्य शिरोमणि श्री वर्धमान सागर जी ने 32 साधुओं के पीछी परिवर्तन समारोह के अवसर पर महती धर्म सभा में प्रगट की।

आचार्य श्री ने वर्ष 2024 के चातुर्मास के निवेदन पर बताया कि आचार्य संघ मेवाड़ या बागड़ में या अन्य स्थान, किसी भी क्षेत्र या नगर में या जंगल में हो आप सभी को 100 वां आचार्य पदारोहण गरिमा पूर्ण तरीके से मनाना है। पहले यह कहा जाता था कि दिगंबर धर्म में गुरु नहीं है किंतु आचार्य शांति सागर जी की देन है कि उन्होंने अनेक साधु बनाए। आचार्य पदारोहण आपको उत्साह, शक्ति, संकल्प के साथ मनाना है। संकल्प, शक्ति और उत्साह होने से पुरुषार्थ सफल होता है। इसके पूर्व भी अनेक बड़े-बड़े महोत्सव चाहे श्रवणबेलगोला का महामस्तकाभिषेक हो या महावीर स्वामी का महामस्तकाभिषेक हो सभी बड़े कार्यक्रम दृढ़ संकल्प शक्ति से पूर्ण हुए है। आज पंडित सुमेर चंद दिवाकर का जैन समाज पर उपकार ऋण है कि उन्होंने अगर चारित्र चक्रवर्ती ग्रंथ नहीं लिखते तो उनके जीवन से हम आप परिचित नहीं हो पाते। इसलिए अज्ञान रूपी अंधकार को ज्ञान रूपी दीपक से दूर करने का प्रयास करें। इसके पूर्व आचार्य संघ के मंचासीन होने पर आचार्य शांति सागर जी एवं सभी पूर्वाचार्य के चित्र का अनावरण कर दीप प्रवज्लन आमंत्रित अतिथियों ने किया। ईशान जैन द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर आचार्य शांति सागर जी के गुणानुवाद पर निर्ग्रंथ महर्षि कलर बुक का लोकार्पण आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज एवं बाहर से आए अतिथियों द्वारा किया गया। सुरेश पद्मावत पारस चितोड़ा अनुसार इस अवसर पर वर्ष 2023 के चातुर्मास का मंगल कलश पंडित जवाहरलाल जी शास्त्री भिंडर को प्रदान किया गया। आचार्य श्री के चरण प्रक्षालन एवं पूजन करने का सौभाग्य श्री मिलाप जी कोठारी अहमदाबाद को प्राप्त हुआ। जिनवाणी राजेश बी अहमदाबाद में भेंट की।

आचार्य श्री को नवीन पीछी संघ के गजू भैय्या एवं सभी भैय्या दीदियों ने दी। पुरानी पीछी लेने का सौभाग्य श्री शांतिलाल वेलावत परिवार को प्राप्त हुआ। संघ के सभी साधुओं को नवीन पीछी देने और पुरानी पीछी लेने का सौभाग्य चयनित पुण्यशाली परिवारों को प्राप्त हुआ। मंच संचालन मुनि श्री हितेंद्र सागर जी एवं आर्यिका श्री महायशमती जी ने किया। कार्यक्रम संचालन डा. राजेश ने किया।

Vayudoot Group
ला: नेमचन्द जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ

Vayudoot WORLD TRAVELS INDIA PVT. LTD
Vayudoot DESTINATION WEDDINGS & EVENTS
Vayudoot GROCERIES
Vayudoot CATERERS

वायुदूत की सुप्रसिद्ध शुद्ध स्वादिष्ट किचन वाली जैन भोजन सुविधा

WORLD TRAVELS DESTINATION WEDDINGS GROCERIES CATERING

+91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

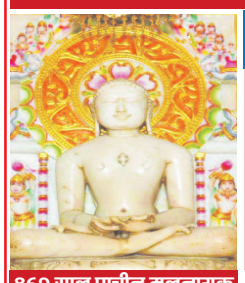

869 साल प्राचीन मूलनायक
श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण

LIVE

आरती : 7:15 - 7:45 AM

शांतिधारा : 8:30 AM

@jainmandirhasteda

नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885

नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.

संपर्क सूत्रः
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री)
9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष)
095880-20330

पंचकल्याणक महामहोत्सव की वेदिका का हुआ शिलान्यास

पात्रों का हुआ चयन

मनीष विद्यार्थी, सागर, संवाददाता

शाहगढ़ (सागर)। नगर में बन रहे सादपुर वालों का सातवां जिनालय का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 10 दिसंबर से 15 दिसंबर तक आयोजित होगा। जिसके वेदिका शिलान्यास एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रमुख पात्रों का चयन बी एस जैन कंपाउंड में किया गया।

परम पूज्य आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के परम प्रभाकर शिष्य : उपाध्याय श्री विरंजन सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में पं. मनोज शास्त्री बागरोही के निर्देशन में विधिविधान पूर्वक संपन्न हुआ जिसमें महोत्सव के महत्वपूर्ण पात्रों में माता-पिता बनने का सौभाग्य सुरेश जैन, सौधर्म इंद्र पूनम संतोष जैन सातपुर वाले सागर, धनपति कुबेर कुंदन लाल भूपेंद्र सादपुर, महायज्ञ नायक दामोदर हर्ष सेठ, यज्ञ नायक महेश सादपुर, भरत चक्रवर्ती दीपचंद खुटकुवा, बाहुबली दिनेश जैन सादपुर, ईशान इंद्र सौरभ संदीप सेठ, सनत इंद्र दयाचंद सुरेश सादपुर, महेंद्र भागचंद सुधीर संदीप सेठ, पात्रों के चयन किए गये। परम पूज्य जनसंत उपाध्याय श्री विरंजन सागर महाराज ने पंचकल्याणक की महिमा बताते हुए कहा कि पाषाण से भगवान बनाने की मांगलिक क्रिया में जहां अपूर्व धर्म की प्रभावना होती है। वहीं प्रमुख पात्र बनकर धर्मात्मा असीम पुण्य का संचय करते है। व्यक्ति का जन्म एक मां की कोख से दूसरा जिनवाणी मां से होता है, पंचकल्याणक में पाषाण से भगवान नहीं एक इंसान को भगवान बनाने की क्रियाओं से गुजरना पड़ता है, भगवान के गर्भ में आने के 6 माह पहले से ही रत्नों की वर्षा होने लगती है, इसी तरह शाहगढ़ में होने जा रहे पंचकल्याणक महोत्सव के 6 माह पहले से ही सादपुर मंदिर कमेटी द्वारा पंचकल्याणक महोत्सव की भूमिका बनाई जाने लगी थी, जहां पर भगवान के पंच कल्याणक की क्रियाएं होना है आज उस वेदिका का शिलान्यास हुआ। बीएस कालोनी में रखी गई होने वाले पंचकल्याणक महोत्सव की वेदिका की मुख्य आधार शिला गुलाब संधेलिया हीरापुर वालों द्वारा रखी गई।

कुंडलपुर में भगवान महावीर का 2550 वां निर्वाण महोत्सव पर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया

रत्नेश जैन बकस्वाहा, संवाददाता

कुंडलपुर। सुप्रसिद्ध जैन तीर्थ सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर में जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर का 2550 वां निर्वाण महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। जैन समाज की ओर से सामूहिक वार्षिक वात्सल्य भोज का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं, पुरुष, बच्चे उपस्थित रहे। इस अवसर पर भक्तामर महामंडल विधान, पूज्य बड़े बाबा का अभिषेक, शांतिधारा, महावीर पूजन, विधान संपन्न हुआ। कुण्डलपुर कमेटी के जयकुमार जलज हटा ने बताया कि इस अवसर पर देश के कोने-कोने से आए हजारों भक्तों द्वारा अत्यंत भक्ति भाव से निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव की पूर्व संध्या पर मान स्तंभ परिसर में दीपोत्सव का कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने दीप प्रज्वलित किये। इस अवसर पर कुंडलपुर स्थित वर्धमान सरोवर में कृत्रिम मंदिर का मॉडल का जलावतरण किया गया। रंग बिरंगी रोशनी से जगमगाता मंदिर का मॉडल सरोवर के बीच आकर्षण का केंद्र रहा। अभिषेक शांतिधारा ऋद्धि कलश एवं निर्वाण लाडू चढ़ाने का सौभाग्य सुनील सौरभ ऋषि जैन टीकमगढ़, डॉक्टर दिनेश सौधर्म जैन छैघरिया परिवार सागर, पीयूषकांत प्रत्यूष प्रदीप जैन बिलासपुर को प्राप्त हुआ। शांति धारा करने का सौभाग्य चंद्र कुमार सर्राफ, श्रीमती सरोज रानी, आलोक, अमित, ललित सर्रा, परिवार दमोह, संजय राजेश कुबेर परिवार पथरिया को प्राप्त हुआ। भगवान श्री पारसनाथ शांतिधारा करने का सौभाग्य रोहित राजेश कुमार जैन अभाना, विकास निखिल विनोद राजेंद्र परिवार दमोह इंदौर को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु भक्त एवं कुंडलपुर क्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी सदस्यों की उपस्थिति रही। सायंकाल भक्तामर दीप आराधना एवं पूज्य बड़े बाबा की महाआरती की गई।

नैनागिरि में 2550वें निर्वाण महोत्सव पर चढ़ाया निर्वाण लाडू

रत्नेश जैन रागी, संवाददाता

बकस्वाहा। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाणोत्सव व गणधर गौतम स्वामी के केवलज्ञान महोत्सव एवं दीपोत्सव के पावन अवसर पर श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र (रेशंदीगिरि) नैनागिरि की पावन भूमि के गिरिराज स्थित पार्श्वनाथ चैबीसी जिनालय में देश के हजारों श्रद्धालु भक्तों ने भक्ति भाव से तीर्थराज की वंदना, पूजन अर्चन के साथ शांतिधारा कर निर्वाण लाडू समर्पित कर पुण्यार्जन किया। जैन तीर्थ (रेशंदीगिरि) नैनागिरि ट्रस्ट कमेटी के मंत्री राजेश रागी ने विज्ञप्ति में बताया कि अनेक भक्त श्रद्धालुओं ने भगवान का मस्तकाभिषेक कर शांतिधारा की जिसमें प्रमुखता से नरेन्द्र कुमार बांदरी, रमेश कुमार यशवंत कुमार पडवार वाले बण्डा, माणिक चंद्र राहुल कुमार सचिन कुमार बम्हौरी वाले इंदौर, सुमत कुमार भूषा परिवार बण्डा के साथ ही विमल कुमार कदवां, ब्रह्म. सुमन दीदीजी गैरतगंज, सुरेश चंद्र कपिल कुमार जैन बण्डा, श्रीमती वंदना जैन श्रीपाईप सागर सहित अनेक श्रद्धालुओं को प्राप्त हुआ। हजारों श्रद्धालु भक्तजनों ने वात्सल्य स्नेह भोजन ग्रहण किया और दीपावली व वीर निर्वाण नये वर्ष की मंगल शुभकामनाएं देकर तीर्थ संरक्षण संवर्धन की भावना व्यक्त। इस मौके पर आगामी 04 से 10 दिसम्बर तक नैनागिरि में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव रथोत्सव के मुख्य पात्रों के पुण्य की अनुमोदना कर सम्मानित किया गया और नये पात्रों हेतु भावना जागृत करने व सहयोग की कमेटी ने कामना की।

88 वर्षीय केशरबाई जैन ने घर से डाला वोट

सनावद। 217 सोलंकी कालोनी में प्रातः 11 बजे वरिष्ठ पत्रकार, जैन गजट के सह सम्पादक, ओजस्वी वक्ता राजेन्द्र जैन 'महावीर' के घर उनकी 88 वर्षीय माताजी श्रीमती केशर बाई जी जैन ने मतदान दल क्र. 8 के समक्ष अपना मतदान किया। मतदान दल के पीठासीन अधिकारी हरेसिंह सिसोदिया ने माइक्रो आब्जर्वर सूर्यभान सिंह की उपस्थिति में मतदान दल के कैलाश इटारे, बीएलओ सुरेश रंगीले, पुलिस कर्मी आदि की उपस्थिति में मतदान कराया। मतदान की गोपनीयता के लिए बूथ भी बनाया गया। मतदान से प्रसन्न केशरबाई जैन ने कहा कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए वोट देना जरूरी है, सभी को वोट जरूर देना चाहिये । वे कई वर्षों से वोट दे रही हैं। मतदान दल का स्वागत करते हुए उनकी बहु अनुपमा जैन ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा 80 वर्ष से अधिक बुजुर्ग मतदाताओं के लिए घर से मत देने की प्रक्रिया स्वागत योग्य है। इससे बुजुर्ग जनों को लाभ मिल रहा है साथ ही मतदान की प्रक्रिया से कोई वंचित भी नहीं हो रहा है। उन्होंने बताया कि यदि यह सुविधा उपलब्ध नहीं होती तो उनकी सासुजी मतदान करने नहीं जा सकती थीं। मतदान दल व भारत निर्वाचन आयोग का आभार व्यक्त किया।

जैन दर्शन से ही रहेगी हमारी संस्कृति सुरक्षित

- आचार्य विनम्रसागर जी

ललितपुर। चैतीस स्थान दर्शन अनुशीलन पर आयोजित राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी में उच्चारणाचार्य विनम्रसागर महाराज ने अपने सम्बोधन में कहा कि जैनदर्शन की वाणी अनवरत रूप से प्रवाहित रहे तभी हमारी संस्कृति सुरक्षित रहेगी। इसके लिए उन्होंने विद्वत् वर्ग का आह्वान किया कि जितना अधिक धार्मिक ज्ञान से जुड़ेंगे, ज्ञान की वष्द्धि होगी। आचार्य श्री ने संगोष्ठी से होने वाली अनेक जिज्ञासाओं का समाधान किया और ज्ञान का प्रकाश व धर्म की प्रभावना के लिए विद्वत्वर्ग को आशीर्वाद प्रदान किया। संगोष्ठी में आचार्य श्री के अतिरिक्त संघस्थ मुनि विज्ञ सागर महाराज, विनंद सागर महाराज, मुनि श्री विनुत सागर महाराज, मुनि श्री शुभ सागर महाराज, मुनि श्री विश्वधीर सागर महाराज, मुनि श्री विश्वमित सागर महाराज, आर्यिका विमल श्री माता जी, आर्यिका विनेह श्री माता, वितप श्री माता जी, विसम श्री माता जी, विपुल श्री माता जी, विभव्य श्री माता जी, विशर्व श्री माता जी, प्रमा श्री माता जी विराजमान रहीं। संगोष्ठी की संयोजना डा. नीलम सर्राफ ने आचार्य श्री विनम्रसागर महाराज के सानिध्य में संगोष्ठी को अत्यन्त उपयोगी बताया। समापन पर आमंत्रित विद्वानों का जैन पंचायत द्वारा शाल श्रीफल से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में 2 नगर गौरव, 4 पत्रकार श्री, 150 छात्र-छात्राऐं सम्मानित

शाहगढ़ (मध्य प्रदेश)। स्थापना दिवस पर तहसील प्रेस क्लब मध्य प्रदेश के तत्वावधान में आयोजित 11वां प्रतिभा सम्मान समारोह, पत्रकार सम्मेलन, करियर काउंसलिंग, ज्ञानोदय प्रेस अवार्ड कार्यक्रम नगर भवन शाहगढ़ में जनसंत उपाध्याय श्री विरंजन सागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में संपन्न हुआ। नगर गौरव परम पूज्य आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज की पावन प्रेरणा से स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय सागर, भारतीय स्टेट बैंक शाखा शाहगढ़ के द्वारा प्रायोजक 11 वां प्रतिभा सम्मान समारोह कार्यक्रम में करियर काउंसलिंग में डॉ. कृष्ण राव सागर ने विद्यार्थियों को जीवन में सफल कैसे बने के टिप्स दिए।

नवरात्र संपन्न

सुनील सेठी, संवाददाता

गुवाहाटी। प्रत्येक वर्ष की भांति इस साल भी नवरात्रा के अवसर पर पद्मावती माता मंदिर में माता की गोद भराई का आयोजन विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के साथ किया गया। इस अवसर पर मालिगाँव स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन चैत्यालय मे पंडित नरेंद्र कुमार शास्त्री के सानिध्य में रोजाना माता की गोद भराई की रस्म पूरी की गई।

बाराबंकी में कल्पद्रुम विधान का आयोजन

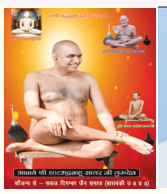

बाराबंकी। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्ति सागर जी महाराज की अक्षुण्ण परम्परा को आगे बढ़ाने वाले आचार्य भद्रबाहू सागर जी महाराज के सान्निध्य में बाराबंकी में कल्पद्रुम विधान 20 नवम्बर से 29 नवम्बर तक होना निश्चत हुआ है जिसमें समाज के लोकप्रिय अध्यक्ष-दीपचन्द सुभाषचन्द गंगवाल को सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ज्ञात रहे कि बाराबंकी का जैन समाज धर्मात्माओं की नगरी है। भारत में बाराबंकी का नाम जिनधर्म जिनशासन की प्रभावना में अग्रणी है। - **शेखरचन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन**

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के अवतरण दिवस पर ड्राइंग कम्पटीशन का आयोजन

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के अवतरण दिवस शरद पूर्णिमा पर मुनि श्री सुदत्तसागर जी महाराज एवं क्षुल्लक श्रीचंद्र दत्त सागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में श्री ज्ञानसागर संस्कार पाठशाला, अंकुर कालोनी, मकरोनिया के बच्चों ने ड्राइंग कंपटीशन में भाग लिया। सुबह आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागर महाराज की पूजन भी पाठशाला के बच्चों के द्वारा की गई। यह जानकारी पाठशाला संचालिका श्रीमती माया जैन एवं श्रीमती वर्षा जैन ने दी।

जैन गजट को शीघ्र आवश्यकता है

1895 से प्रकाशित हो रहे जैन समाज के सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले जैन गजट साप्ताहिक के सदस्य बनाने, विज्ञापन बुक करने एवं जैन समाज के धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों के समाचार भेजने हेतु देश भर में जगह जगह संवाददाताओं की शीघ्र आवश्यकता है। आकर्षक कमीशन एवं अन्य लाभ योग्यतानुसार। आवेदन जैन गजट के वाट्सऐप नं. 7607921391 या 9415108233 पर भेजिये। आवेदन प्राप्त होने पर आपसे संपर्क किया जावेगा।

संपर्क - जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ,
मो. 9415008344, 7607921391, 7505102419,
Email- jaingazette2@gmail.com
www.jaingazette.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
SANTOSH JAIN & ASSOCIATEL
SWATI VINIMAY & CONSULTAN PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTER,
PNB Building, 4th Floor, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 99574-97927

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

श्रेयांसगिरी पंचकल्याणक: प्राचीन-द्रव्य संचय क्रिया का हुआ भव्य आयोजन

पन्ना, 16 नवम्बर। 10 वर्षोपरान्त अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरी में परम पूज्य भारत गौरव, गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन सानिध्य में 18 से 23 नवंबर 2023 तक संपन्न होने वाले श्री मज्जिनेन्द्र शांतिनाथ पंचकल्याणक जिनबिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत द्रव्य संचय क्रिया संपन्न हुई। बतलाते हैं प्राचीन काल से ही यह परंपरा रही है कि पंचकल्याणक में नगर-नगर के श्रावक श्रेष्ठी अपनी सामर्थ्यानुसार महोत्सव में समर्पित की जाने वाली चावल, नारियल, बादाम, ड्राय फ्रूट आदि अर्घ्य सामग्री को भेंट करते हैं अतः श्रेयांसगिरी में भी देवेंद्र नगर, पन्ना, पवई, गुनौर, नागौद, ककरहटी, इटवा, महेवा, बृजपुर, सतना इत्यादि नगरों की श्रद्धालु समाज ने द्रव्य संचय कर पंचकल्याणक समिति के लिए भेंट की। यद्यपि वर्तमान में इस पद्धति का लोप सा हो गया है किंतु पूज्य गणाचार्य श्री ने इस महत्वपूर्ण क्रिया का पुनः प्रवर्तन कर समाज को नया संदेश दिया।

क्या है द्रव्य संचय क्रिया का महत्व: शास्त्रों

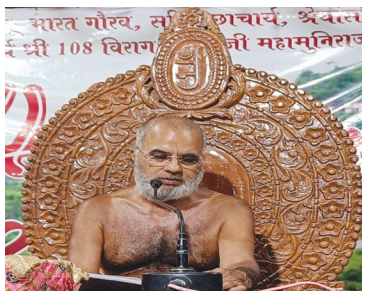

में पंचकल्याणक महोत्सव के बारे में कहा है कि जो पंचकल्याणक में करता है, कराता है, अनुमोदन करता है वह सभी प्रकार के सुखों को प्राप्त कर जल्द ही मोक्ष को प्राप्त करता है। इसी प्रकार जो पंचकल्याणक में उपयोगी सामग्री को भेंट करता है वह भी संपूर्ण सांसारिक सुखों के साथ मुक्तावस्था को प्राप्त करता है यही कारण है कि भक्त जन इस क्रिया में बढ़-चढ़कर आगे आते हैं।

पंचकल्याणक को लेकर संपूर्ण अंचल में हर्ष का माहौल: 10 वर्ष उपरांत होने वाले इस पंचकल्याणक महोत्सव को लेकर संपूर्ण अंचल की समाज में हर्षोल्लास का माहौल है। इस महोत्सव में शामिल होने के लिए इंद्र इंद्राणिगण बढ़-चढ़कर आगे आ रहे हैं।

महोत्सव में पधारने की अपील: मीडिया प्रभारी भरत सेठ घुवारा ने उक्ताशय कि जानकारी देते हुए बतलाया कि पंचकल्याणक आयोजन समिति ने समस्त जैन जैनेत्तर धर्मावलंबियों से अधिक से अधिक संख्या में महोत्सव में सम्मिलित होकर धर्म लाभ लेने की पुरजोर अपील की है।

2550 दीपों से बनाई भगवान महावीर की आकृति

बाराबंकी। श्री दिगम्बर जैन मंदिर में आचार्य भद्रबाहु सागर जी महाराज के सान्निध्य में भगवान महावीर का 2550वां निर्वाण मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर जैन समाज की ओर से महावीर उद्यान में पावापुरी (जहां से महावीर भगवान मोक्ष गए) का निर्माण किया गया, जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने निर्वाण लाडू चढ़ाए। शाम को 31 फीट की भगवान महावीर की आकृति बनाकर 2550 द्वीपों से उसे सजाया गया। इसको पूर्णरूप प्रिया, अंजली जैन व निष्ठा श्रीवास्तव ने दिया। श्रुति जैन के नेतृत्व में कार्यक्रम हुआ। आस्तिक जैन ने भजन संध्या प्रस्तुत की।

श्री पवन जी घुवारा को मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी में प्रदेश महामंत्री का मिला दायित्व

रत्नेश जैन बकस्वाहा, संवाददाता

छतरपुर। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री कमलनाथ जी पूर्व मुख्यमंत्री की अनुशंसा पर मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी में पवन घुवारा टीकमगढ़ को प्रदेश महामंत्री पद का दायित्व दिये जाने पर अनेक कांग्रेस व सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों ने बधाई प्रेषित कर कांग्रेस के वरिष्ठजनों का आभार व्यक्त किया। पवन घुवारा ने शीर्ष नेतृत्व कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी, महासचिव श्रीमती प्रियंका गांधी, म. प्र. कांग्रेस के अध्यक्ष कमलनाथ पूर्व मुख्यमंत्री, दिग्विजय सिंह, राजीव सिंह संगठन महामंत्री सहित अनेक कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं का आभार व्यक्त किया। स्मरण रहे कि पवन घुवारा टीकमगढ़ स्व. श्री कपूर चंद्र घुवारा पूर्व विधायक के ज्येष्ठ पुत्र

है। उन्होंने बुंदेलखंड पैकेज पर लगातार संघर्ष किया और डा. मनमोहन सिंह जी पूर्व प्रधानमंत्री तक पहुंचकर जन जन की आवश्यक आवाज को पुरजोर रखना, वहीं राजीव गांधी एक्सीलेंस अवॉर्ड से सम्मानित, पूर्व मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी में सचिव पद के साथ लगातार दायित्वों में लगे है। सागर संभाग युवा कांग्रेस प्रदर्शन प्रभारी- 2004, श्रीमती सोनिया गांधी जी द्वारा 2005 में 11 ट्रक बाढ़ राहत सामग्री वितरण छतरपुर जिला के प्रभारी एवं कांग्रेस विचार विभाग प्रदेश महामंत्री 2017, म. प्र. कांग्रेस द्वारा बनाई प्रदेश स्तरीय समिति में सदस्य, पोल खोल जन अभियान 2018 जिला कांग्रेस महामंत्री वर्ष 2009 से 2017 तक के साथ विभिन्न दायित्वों का निर्वाह किया है। पवन घुवारा को प्रदेश महामंत्री का दायित्व मिलने पर मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश प्रतिनिधि राजेश रागी बकस्वाहा, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी बकस्वाहा अध्यक्ष संजय दुबे, एनएसयूआई ब्लाक अध्यक्ष प्रतीक चैधरी, पूर्व अध्यक्ष रत्नेश जैन सहित अनेक लोगों ने बधाई शुभकामनाएं प्रेषित कर वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं का आभार व्यक्त किया है। जैन राजनैतिक चेतना मंच ने भी आपके इस मनोनयन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुये बधाई एवं शुभकामनायें प्रेषित की है।

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन/भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार

'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009 Cell : 919435111035

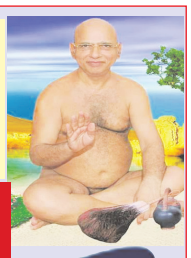

Jain Group

निर्मल - पुष्पा बिन्दायका
बगरू निवासी कोलकाता प्रवासी

EVER GREEN be positive get positive

Evergreen Hosiery Industries Pvt. Ltd.

Corp. Regd. Office : 39, Tara Chand Dutta Street, 2nd Floor
Opp. : Moonlight Cinema, Kolkata - 700 073 (W.B.)
Mobile : 033 4001 0686, 91633 91228, 80131 20773
Email : evergreenhosieryindustries@yahoo.com
Website : www.evergreenhosieryindustries.com

Hello Bebe
LITTLE POPS KIDS WEAR
Young India Fashions
Corp. Off. : 39, Tara Chand Dutta Street, 2nd Floor, Opp. : Moonlight Cinema Kolkata - 700 073 (W.B.) Mob. : 98300 05085, 98302 75490
Factory : Regent Garments & Apparel Park, Block - 23, 5th Floor, Jessore Road Near Fortune Township, Dist. - 24 Parganas (N) - 743294, Mob. : 98311 31838

MAHAVEER SAREE
Address : 446, Abhishek Market, Ring Road, Surat, 395002 (Gujrat)
Mobile : 75750 41434

EVERGREEN CREATION
Address : 369, Abhishek Textile Market, Ring Road, Surat, 395002 (Gujrat)
Mobile : 97279 82406, 98280 18707

फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के सभी जिनालयों में भ. महावीर का 2550 वां निर्वाणोत्सव मनाया

कार्तिक सुदी एकम से जैन धर्मावलंम्बियों के नववर्ष वीर निर्वाण सम्वत 2550 का हुआ शुभारंभ

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाड़ा, चौरु, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, निमेडा एवं लदाना सहित फागी कस्बे के आदिनाथ मंदिर, बीचला मंदिर, मुनिसुव्रतनाथ मंदिर, त्रिमूर्ति जैन मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर, चंद्रप्रभु नसिया तथा चंद्रपुरी मंदिर सहित सभी जिनालयों में प्रातः श्रीजी का अभिषेक, महाशांतिधारा एवं अष्ट द्रव्यों से पूजा की गई तथा जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर का 2550 वां निर्वाणोत्सव भक्ति भाव के साथ सामूहिक रूप से जयकारों के साथ मनाया गया। इस मौके पर संपूर्ण देश सहित बिहार के पावापुर में राष्ट्रीय स्तर पर तथा दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में प्रदेश स्तरीय मुख्य समारोह भव्यता के साथ संपन्न हुआ। इसी कड़ी में फागी कस्बे के पार्श्वनाथ दिगंबर जैन चैत्यालय में रतनलाल, राजेंद्र कुमार, लोकेश कुमार, अनिल कुमार, अमन कुमार नला वाले परिवार जनों की तरफ से बोली के माध्यम से मुख्य वेदी पर 25 किलो का 2550 वां महावीर निर्वाण मोक्ष का श्री जी के समक्ष लाडू चढ़ाने का सोभाग्य प्राप्त किया, वासुपूज्य भगवान की वेदी पर रामावतार, अनिल कुमार, गणेश कुमार, मुकेश कुमार विनोद कुमार कठमाणा वाले परिवार जनों ने बोली के माध्यम से लाडू चढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त किया तथा नेमिनाथ भगवान की वेदी पर महावीर प्रसाद, धर्मचंद, विनोद कुमार, पारसकुमार, दीपक कुमार मोदी फागी वाले परिवारजनों की तरफ से बोली के माध्यम से लाडू चढ़ाया गया। इसी कड़ी में सारे समाज ने निर्वाण कांड भाषा का वाचन करते हुए सामूहिक रूप से जयकारों के साथ श्री जी के समक्ष लाडू चढ़ाकर सुख, समृद्धि और शांति की कामना की। इसी कड़ी में अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा एवं सरावगी समाज के अध्यक्ष महावीर अजमेरा तथा विरेन्द्र डोषी ने जैन समाज के नव वर्ष वीर निर्वाण सम्वत 2550 के शुभारंभ होने पर सारे समाज को शुभकामनाएं प्रेषित कर सुख समृद्धि की कामना की। कार्यक्रम में समाजसेवी सोहनलाल झंडा एवं कैलाश कलवाड़ा ने जानकारी देते हुए बताया कि इस बार भगवान महावीर स्वामी के संदेशों को घर-घर तक पहुंचाने की मुहिम भारत सरकार द्वारा माननीय देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में निर्वाण महोत्सव को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का निर्णय लिया गया है। यह अभियान 13 नवंबर से शुरू होकर एक वर्ष के लिए भगवान महावीर स्वामी के संदेशों को समर्पित रहेगा तथा जियो और जीने दो जैसे उनके मानव कल्याण के संदेशों को घर-घर तक पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा। निर्वाण महोत्सव को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने के इस निर्णय के लिए सारे जैन समाज ने केंद्र एवं राज्य सरकार का आभार जताया है। उक्त अवसर पर समाज के वयोवृद्ध कपूर चंद जैन मांदी, पूर्व सरपंच ताराचंद जैन, मोहनलाल झंडा, प्यार चंद पीपलू, कैलाश कलवाड़ा, सोहनलाल झंडा, प्रेमचंद भंवसा, रामस्वरूप जैन मंडावरा, रामस्वरूप मोदी, चम्पालाल जैन, केलास पंसारी, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा, सरावगी समाज के अध्यक्ष महावीर अजमेरा, फागी पंचायत समिति के पूर्व प्रधान सुकुमार झंडा, पूर्व प्रधान महावीर प्रसाद बावड़ी, केलास कासलीवाल, सुरेश सांघी, नेमीचंद कागला, सुरेश मांदी, पं. संतोष बजाज, केलास कडीला, सौभागमल सिंघल, भागचंद कासलीवाल, महेंद्र कासलीवाल, नवरत्न मल मंडावरा, रतन नला, हरकचंद झंडा, रमेश बजाज, हरकचंद पीपलू, शिखर मोदी, विरेन्द्र डोषी, सत्येंद्र झंडा, सुनील गंगवाल, सुरेश डेठानी, टीकम गिंदोडी, राजेंद्र कलवाडा, रमेश बावड़ी, एडवोकेट रवि जैन, राजेश छाबड़ा, बाबूलाल पहाड़िया, पवन गंगवाल, शांतिलाल धमाणा, शांति लाल सेठी, महेंद्र बावड़ी, पारस नला, विमल कलवाडा, अनिल कठमाना, सुरेंद्र बावड़ी, सुरेंद्र पंसारी, विनोद कलवाडा, ओमप्रकाश कासलीवाल, राजेंद्र मोदी, महावीर मोदी, महावीर बजाज, पदम बजाज, पवन कागला, शिखर गंगवाल, मुकेश गिंदोडी, पारस मोदी, विनोद मोदी, मितेश तय लदाना, मनीष गोधा, कमलेश चैधरी, कमलेश सिंघल, कमलेश झंडा, बन्टी पहाड़िया, त्रिलोक पीपलू तथा राजाबाबु गोधा सहित सारे श्रावक श्राविकाएं साथ-साथ थे।

जनकपुरी ज्योति नगर में आर्यिका विशेषमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में

भ. महावीर का 2550 वां निर्वाणोत्सव मनाया भक्ति भाव के साथ

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर। जनकपुरी ज्योतिनगर जैन मंदिर में महावीर भगवान का 2550 वाँ निर्वाणोत्सव, बालयोगिनी आर्यिका श्री 105 विशेषमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में भक्ति भाव के साथ मनाया गया। प्रबंध समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि निर्वाणोत्सव की पूर्व संध्या रविवार की शाम विशेष भक्तामर दीप अर्चना एवं आरती की गई। सोमवार को प्रातः मन्दिर जी में अभिषेक व बीजाक्षर युक्त शान्तिधारा हुई। वेदी में विराजित पाषाण प्रतिमा की शांतिधारा का सौभाग्य कैलाश चंद विकास साखूनिया परिवार को मिला, इसके बाद भगवान को पांडाल में पाण्डुक शिला पर विराजित करने का व अभिषेक व विशेष शान्तिधारा करने का पुण्य लाभ मास्टर आदिश बिलाला व मास्टर आदित बिलाला परिवार को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात नित्य पूजन तथा 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर की पूजन आर्यिका श्री संघ द्वारा साज बाज के साथ करायी गई, जिसमें चैबीस (24) परिवारों की विशेष सहभागिता रही। सभी ने निर्वाण काण्ड का वाचन कर भगवान महावीर के मोक्ष कल्याणक का अर्घ्य बोलते हुए जयकारों के साथ सामूहिक रूप से निर्वाण लाडू चढ़ाया। 24 परिवारों के अलावा पांडाल में सौभागमल, तरुण, पंकज, रचित अजमेरा परिवार ने तथा वेदी पर धर्म चंद दिनेश, हिमांशु सौगानी परिवार ने निर्वाण लाडू चढ़ाया। कार्यक्रम में विधायक काली चरण, सर्राफ पार्षद राकेश शर्मा, प्रबंध समिति के मंत्री देवेंद्र कासलीवाल, राजेश गंगवाल, सौभाग अजमेरा, सुनील सेठी, नवीन सेठी, मिश्रीलाल काला, महावीर बिन्दायका, धन कुमार शाह, महेश काला, अजय श्रीमाल, महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला बिंदायक्या, अनीता बिंदायक्या, पुष्पा बिलाला, सुलोचना पाटनी, सुनीता भोंच तथा युवा मंच के अध्यक्ष अमित शाह, प्रतीक जैन, नीरज जैन के अलावा समाज के सनत चाँदवाड, ज्ञानचंद भोंच, प्रकाश गंगवाल, कमलेश पाटनी, जे के जैन, बुद्धि प्रकाश, प्रदीप चाँदवाड़, सुरेश शाह, राजेंद्र ठोलिया, महावीर कोठारी, चन्द्रप्रभा शाह, कनफूल कासलीवाल, कांता बैद आदि गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही। सभी द्वारा 2550 वें निर्वाणोत्सव पर 50 दीपकों से भगवान महावीर की आरती की गई। दोपहर में रमेश साखूनिया के मार्गदर्शन में मन्दिर जी में भगवान महावीर की विशेष आराधना का आयोजन एवं शाम को महा आरती का आयोजन हुआ।

प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र गिरनार की रक्षार्थ दीपावली पर जैन समाज ने किया अनशन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 14 नवम्बर। दीपों के त्यौहार दीपावली पर जैन संतों सहित सकल जैन समाज जैन धर्म के 22 वें तीर्थंकर भगवान नेमीनाथ की मोक्ष स्थली गिरनार तीर्थ की रक्षा हेतु भट्टारक जी की नसियां में जयपुर सहित देश के कई शहरों में सांकेतिक अनशन हुआ। कार्यक्रम में राजस्थान में समाज की प्रादेशिक स्तर की एक मात्र पंजीकृत संस्था राजस्थान जैन सभा जयपुर के तत्वावधान में सम्पूर्ण प्रदेश में जिलों एवं तहसील स्तरों सहित गांवों में जैन मंदिरों पर तीन घंटे का सांकेतिक अनशन किया गया। सभा के अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन एवं महामंत्री मनीष बैद ने बताया कि राष्ट्र सन्त आचार्य सुनील सागर महाराज की प्रेरणा से सम्पूर्ण देश के जैन संतों ने रविवार, 12 नवम्बर दीपावली को आहार चर्या का त्याग किया तथा मौन रहकर अनशन किया।

''**सन्तों का अनशन सहन नहीं** – जागो सरकार जागो'' अभियान के तहत सम्पूर्ण जैन समाज दिगम्बर एवं श्वेतांबर पूरे राजस्थान प्रदेश में शहरों, कस्बों एवं गांवों में सिद्धक्षेत्र श्री गिरनार जी तीर्थ की रक्षा के लिए प्रातः 9 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक सामूहिक सांकेतिक अनशन किया गया। सभा के मंत्री विनोद जैन कोटखावदा के मुताबिक जयपुर में नारायण सिंह सर्किल स्थित भट्टारक जी की नसियां में जयपुर जैन समाज एकत्रित हुआ। अन्न जल का त्याग रखते हुए तीन घंटे का सामूहिक सांकेतिक अनशन किया। अनशन के दौरान विश्व शांति प्रदायक णमोकार महामंत्र का सामूहिक जाप किया गया। तत्पश्चात नेमीनाथ चालीसा तथा भजनों के माध्यम से भगवान नेमीनाथ की स्तुति की गई।अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन, एडवोकेट सुधान्शु कासलीवाल एवं महामंत्री मनीष बैद ने सम्बोधित करते हुए गिरनार तीर्थ की वस्तु स्थिति बताई। मंत्री विनोद जैन कोटखावदा के मुताबिक सांकेतिक अनशन में राजस्थान जैन सभा सहित समाज की कई संस्थाओं तथा मंदिर कमेटियों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने सहभागिता निभाई।

टोंक शहर में आर्यिका सूत्रमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में

जयकारों के साथ 2550 निर्वाण लड्डू चढ़ाया

सम्यकज्ञान, सम्यकचारित्र, सम्यकदर्शन रूपी दीपक से हमेशा जीवन में उजाला बना रहेगा - आर्यिका सूत्रमति

राजस्थान की धर्म परायण नगरी टोंक में श्री 1008 भगवान महावीर स्वामी का 2550 वां निर्वाण महोत्सव श्री दिगंबर जैन नसिया अमीरगंज टोंक में आर्यिका 105 सूत्रमति माताजी के ससंघ सानिध्य में बड़े हर्ष और उल्लास के साथ रविवार को प्रातःकाल मनाया गया। कार्यक्रम में समाज के प्रवक्ता पवन कंटान और कमल सर्राफ ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष में रविवार को प्रातःकाल जैन नसिया में अभिषेक, शांतिधारा के पश्चात भगवान महावीर स्वामी की विशेष पूजा अर्चना की गई, तत्पश्चात आचार्य सुनील सागर जी महाराज की पूजा की गई तत्पश्चात श्रद्धालुओं द्वारा निर्वाण कांड भाषा का वाचन कर सामूहिक रूप से महावीर स्वामी का 2550 वां निर्वाणोत्सव का लाडू चढ़ाया गया। इससे पूर्व जैन नसिया में प्रातःकाल की बेला में 5:30 बजे 2550 वां निर्वाण महोत्सव के साथ 2550 दीपकों की रोशनी से जगमगा उठा। इस मौके पर आर्यिका सूत्रमति माताजी ने अपने मंगल में आशीर्वाद से उद्बोधन देते हुए कहा कि आपने दीपावली के मौके पर अपने घरों की सफाई कर ली लेकिन अपने अंदर की सफाई आत्मा रूपी सफाई जरूरी है। मिट्टी के दिए से एक बार उजाला होता है और बाद में फिर अंधेरा हो जाता है लेकिन भीतर के दीपक सम्यकज्ञान, सम्यकचरित्र, सम्यकदर्शन रूपी दीपक से हमेशा जीवन में उजाला बना रहेगा। दीपावली के इस पावन मौके पर आर्यिका 105 सूत्रमति माताजी ने दोनों हाथों से सभी श्रद्धालुओं को मंगलमय आशीर्वाद दिया। इस मौके पर समाज के अध्यक्ष भागचंद फुलेता, मंत्री राजेश सर्राफ, ओम आड़रा, पप्पू नमक, अमित दाखियां, कमल आड़रा, ओम मोहम्मदगढ़, ओम ककोड़, नीटू छामुनिया, प्रदीप सर्राफ, अंकित बिलासपुरिया, आयुष फुलेता, अशोक श्यामपुरा, आदिश गंगवाल, राजेश बोरदा आदि समाज के काफी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। – **जैन गजट संवाददाता**

प्रसिद्ध समाजसेवी एवं मुनि भक्त अनिल कुमार जी बनेठा द्वारा किये गए कंबल वितरण

फागी संवाददाता

श्री दिगम्बर जैन सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ, गुन्सी (राज.) के तत्वावधान में दिवाली के शुभ अवसर पर आर्यिका विज्ञाश्री माताजी चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्रीमान अनिल कुमार जी बनेठा ने कामगार वर्ग के लिए कम्बल वितरण किये। कार्यक्रम में प्रातः शांतिनाथ भगवान की अखण्ड शांतिधारा करने का सौभाग्य श्री देवेंद्र जी भौंच मथुरा वाले, आशीष मित्तल मुम्बई, सुनील जी भाणजा निवाई, अरविंद जी ककोड़ वाले निवाई ने प्राप्त किया। पूज्य माताजी ने सभी को धर्मोपदेश देते हुए कहा कि आज हमारे जो तीर्थक्षेत्र धर्म संकट में जा रहे है हमें उनकी रक्षा के प्रयास करने चाहिए। सरकार से यह अपील करनी चाहिए कि जो हमारे प्राचीन तीर्थक्षेत्र हैं जैसे गिरनार आदि उनको जैन समाज को दिलाने के पूर्णतः प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम में भाई दोज के अवसर पर श्री श्री 1008 शांतिनाथ महामण्डल विधान का महा आयोजन किया गया। अनिल कुमार बनेठा ने अवगत कराया कि आगामी 10 दिसम्बर 2023 को आर्यिका संघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह एवं 108 फीट उत्तुंग कलशाकार सहस्त्रकूट जिनालय के निर्माण का भव्य शुभारम्भ होने जा रहा है।

सम्पादकीय

अहिंसा का महान् सिद्धान्त

अहिंसा का महान् सिद्धान्त जो आज विश्व शांति का सर्वोत्तम साधन समझा जाने लगा है, जैन धर्म के उन्नायकों के द्वारा ही सर्वप्रथम विश्व के सामने प्रस्तुत किया गया है। जैन धर्म की यह महान देन है, जो उसने विश्व को प्रदान की। अहिंसा के कल्याणकारी सिद्धान्त के प्रचारक और प्रसारक के रूप में जैन धर्म का यश गौरव सदा अक्षुण्ण रहेगा। अहिंसा यह निर्मल मन्दाकिनी है, जिसकी पवित्र और शीतल धारा पाप के ताप को नष्ट कर देती है। अहिंसा वह अमृत की कली है जो भीषण भव-रोग को निर्मूल कर देती है। अहिंसा वह मेघ-धारा है, जो दुःख-दावानल को शांत करती है; अहिंसा यह जगज्जननी जगदम्बा है जो जगत के जीवों की रक्षा करती है। अहिंसा वह भगवती है, जिसकी आराधना से जगत के जन्तु निर्भय और सुखी हो सकते हैं। जैन धर्म में आत्मस्वरूप की प्राप्ति का सबसे प्रधान साधन अहिंसा की आराधना माना गया है। जो प्राणी जितने अंश में अहिंसा की आराधना करता है उतने ही अंश में शुद्ध आत्म स्वरूप को प्राप्त करता है। वीतराग आत्मा अहिंसा की उच्चतम कोटि पर पहुँचते हैं, इसलिए वे शुद्ध आत्मस्वरूप में अवस्थित रहते हैं। व्यक्ति के जीवन में अहिंसा जितनी गहरी उतरी हुई होती है वह उतना ही आत्मिक दृष्टि से विकसित होता है। जो व्यक्ति जितनी हिंसा करता है या हिंसक भावना रखता है वह आत्मिक दृष्टि से उतना ही हीन होता है। संसार के सब प्राणी जीवन के अभिलाषी हैं। सबको जीवन प्यारा है। कोई मरना नहीं चाहता, सब मृत्यु से डरते हैं। सब सुखी रहना चाहते हैं। कोई दुःख नहीं चाहता। मरने से दुःख होता है इसलिए कोई मरना नहीं चाहता। प्रत्येक प्राणी अपने जीवन को सबसे अधिक अनमोल मानता है। सब प्राणियों को जीने का समान अधिकार है। यह जानकर किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए। उसके प्राणों का हरण नहीं करना चाहिए, इतना ही नहीं, उसे किसी तरह का शारीरिक या मानसिक कष्ट नहीं पहुँचाना चाहिए। यह अहिंसा की हिंसा-निवृत्ति रूप व्याख्या है। संसार के समस्त जीवों के प्रति मैत्री भाव रखना सब जीवों को आत्म तुल्य समझना और विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करना विधिरूप अहिंसा है।

अहिंसा क्या है, इस प्रश्न को जैनाचार्यों ने बड़ी सूक्ष्म और सरल विधि से समझाया है। हिंसा का सर्वांगपूर्ण लक्षण अमृतचन्द्राचार्य के इस कथन में निहित है- कषाय के वशीभूत होकर द्रव्य रूप या भाव रूप प्राणों का घात करना हिंसा है। यह लक्षण समन्तभद्राचार्य द्वारा प्रणीत अहिंसाणुव्रत के लक्षण जैसा ही परिपूर्ण है। सर्वार्थसिद्धि एवं तत्वार्थ-राजवार्तिक में इसी का समर्थन किया गया है। अहिंसा और हिंसा का जैसा वर्णन 'पुरुषार्थ सिद्धयुपाय' में है वैसा पूर्व या उत्तर के ग्रन्थों में नहीं मिलता है।

उपरोक्त हिंसा के लक्षण में मन की दुष्प्रवृत्ति पर अधिक जोर दिया गया है। क्योंकि अन्तस की कलुषता ही हिंसा को जन्म देती है। इसी बात को आचार्य उमास्वामी ने इस कथन से स्पष्ट किया है- ''प्रमत्तयोगात्प्राण व्यपरोपण हिंसा'' प्रमाद वश प्राणों के घात करने को हिंसा कहते हैं। प्रमत्त शब्द मन की कलुषता, अज्ञानता, असावधानी के अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। गृहस्थ जीवन में मनुष्य नाना क्रियाओं का प्रतिपादन करता है। किन्तु सभी क्रियाएं सावधानी और संयम पूर्वक नहीं होती। अनेक कार्यों को करते हुए मन में कषाय भाव, कटुता उत्पन्न हो जाती है। इससे आत्मा की निर्मलता धुंधली पड़ जाती है। भावनाओं में विकार उत्पन्न हो जाते हैं। इन्हीं दुष्परिणामों से युक्त हो कोई कार्य करना हिंसा है। क्योंकि दुष्परिणामी व्यक्ति के द्वारा भले दूसरे प्राणियों का घात न हो लेकिन उसकी आत्मा का घात स्वयंमेव हो जाता है। इसी अर्थ में वह हिंसक है। क्योंकि किसी दूसरे से किसी दूसरे का प्राणघात सम्भव ही नहीं है। पाश्चात्य देशों में मनुष्य का जीवन आज विभिन्न कुंठाओं से ग्रस्त है और लोगों के मनों में असुरक्षा की भावना व्याप्त है। वे भौतिकता की चरम सीमा पर पहुँचकर अब उससे ऊब गये हैं। इससे विश्व में एक भयानक विस्फोटक स्थिति पैदा होती जा रही है। ऐसी दशा में केवल अहिंसा और अनेकान्त के मार्ग पर चलकर ही परम शांति प्राप्त की जा सकती है।

अहिंसा के मार्ग पर चलने वालों को चाहिए कि वे अहिंसा के सिद्धांतों को सही ढंग से लागू करें। अहिंसा को यदि कहीं असफलता मिलती दिखाई देती है तो उसका कारण यह नहीं है कि अहिंसा के सिद्धांतों में कोई दोष है। अहिंसा की असफलता अहिंसा का उपयोग करने वाले की अयोग्यता के कारण होती है। अतः लोक कल्याण के लिए एक बात मूलभूत रूप से आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति धर्माचरण करे और अहिंसा का पालन करे। भागवत के ग्यारहवें अध्याय में कहा गया है कि-

दृष्टिपूत न्यसेत् पाद वस्त्रपूतंपिवेज्जलम्।
सत्य पूता वदेद् वाचं मनः पूतं समाचरेत् ।।

अर्थात प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह नेत्रों से धरती देखकर पैर रखे, कपड़े से छानकर जल पिये, मुँह से प्रत्येक बात सत्यपूत अर्थात सत्य से पवित्र हुई निकाले और शरीर से जितने भी काम करें, बुद्धिपूर्वक सोच-समझ कर ही करें। ऐसा करने से कभी किसी प्राणी का अहित नहीं होगा। लोक कल्याण का यही एक मात्र सही मार्ग है।

- कपूरचन्द जैन पाटनी, प्रधान सम्पादक

पिच्छि परिवर्तन पर विशेष:
पिच्छिका मोर पंख की ही क्यों

जीव दया व संयम का उपकरण रूप है पिच्छिका

पदम जैन बिलाला, जयपुर

दिगंबर जैन साधु की पहचान मोर पंख की पिच्छी है। दीक्षा के समय आचार्य इस संयम के उपकरण रूप पिच्छिका को जीव दया पालन हेतु शिष्यों को देते हैं। पिच्छी मोर द्वारा छोड़े गए पंखों से निर्मित होती है। यह पिच्छि इतनी मुलायम होती है कि इससे किसी जीव को हानि नहीं पहुंचती। पिच्छि को प्रतिलेखन भी कहते हैं।

पिच्छि मोर पंख की ही क्यों..?

प्राणियों में मोर ही अकेला एक ऐसा प्राणी है जो ब्रह्मचर्य को धारण करता है। मोर जब प्रसन्न होता है तो वह अपने पंखों को फैलाकर नाचते-नाचते मस्त हो जाता है और उस विशेष समय मोर की आँखों से आँसू गिरते हैं। मोरनी तत्काल इन आँसू को पीती है तथा इन आंसुओं से ही गर्भ धारण करती है। मोर में कहीं भी वासना का लेश भी नहीं होता है। कहते हैं कि जिसके जीवन में वासना नहीं होती भगवान उसे शिरोधार्य कर लेते हैं।

पिच्छि के गुण - उपलब्ध लेखों में पिच्छि के पाँच गुण बताए गए हैं - धूलि को ग्रहण नहीं करना, पसीने से मलिन नहीं होना, मृदुता, सुकुमारता और लघुता।

आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी कह रहे हैं - ''जो द्वीन्द्रिय आदि प्राणी सूक्ष्म हैं वे चर्म चक्षु से नहीं दिखते हैं। इसीलिए जीवदया हेतु पिच्छी धारण करना चाहिए। मलमूत्र विसर्जन करना, रात्रि में सोया हुआ साधु जब उठकर बैठता है और पुनः सोता है, करवट बदलता है, हाथ पैर फैलाता है, इत्यादि कार्यों में यदि पिच्छी से परिमार्जन किये बिना ये क्रियाएँ करता है तो नियम से जीव हिंसा होती है। नेत्र में घुमाने पर भी इससे पीड़ा ना होने से यह प्रतिलेखन सूक्ष्मत्वादि गुणयुक्त लघु पिच्छिका ग्रहण करना चाहिए। खड़े होने में, चलने आदि क्रियाओं में इस प्रतिलेखन से शोधन किया जाता है इसलिए स्वपक्ष में जैन मुनियों के चिन्ह में यह एक विशेष चिन्ह है।''

वन्दन - अंजलि जोड़कर पिच्छि के साथ, मूलाचार, मूलाराधना, नीतिसार आदि प्राचीन दिगम्बर जैन ग्रंथों के आधार पर दिगम्बर मुनियों को मयूर पंख की पिच्छिका रखना सर्वथा अनिवार्य बताया गया है। जो साधु अपने पास पिच्छी नहीं रखते हैं उनके लिए शास्त्रों में प्रायश्चित का उल्लेख बताया गया है। साधु सामायिक, वंदना, भगवान व गुरुओं को नमस्कार आदि करते समय पिच्छिका सहित अंजलि जोड़कर ही वंदना करते हैं।

पिच्छिका परिवर्तन साधु सामान्यतः वर्ष में एक बार अपनी पुरानी पिच्छि की जगह नयी पिच्छि बदलते हैं। पिच्छिका परिवर्तन सामान्यतः चातुर्मास के समापन के समय किया जाता है। यह उल्लेखनीय है कि अपने अपने संघ के लिए संघ के सदस्य ही आपसी सहयोग से पिच्छिका तैयार करते हैं।

पिच्छि किसको व किससे

साधु की तप साधना में सहयोगी, आहार- विहार में सहयोगी, व्रत उपवास तथा श्रावकाचार के नियमों को पालन करने वाले संयम का महत्व समझने वाले श्रेष्ठ श्रावक का चयन कर साधु उसको अपनी पुरानी पिच्छि प्रदान करते हैं। इसी प्रकार साधु को नयी पिच्छि देने का सुअवसर भी ऐसे ही किसी सौभाग्यशाली श्रावक को मिलता है। संयम के उपकरण पिच्छि व कमण्डल धारी, चलते फिरते परमेष्ठियों को मेरा शत शत नमन, शत शत वन्दन।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

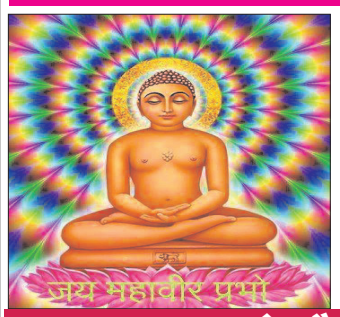

सुरेश कुमार-ललिता देवी बाकलीवाल,
अमित कुमार- स्नेहा देवी बाकलीवाल
कैयरा, जेस्वी, शारव बाकलीवाल

सुरेश कुमार जैन एण्ड कंपनी

तरूण राम फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गुवाहाटी-781001

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

सदस्यता विकास उप समिति

गजराज जैन गंगवाल
राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रकाशचन्द्र बड़जात्या
राष्ट्रीय महामंत्री

महासभा का सदस्य बनने हेतु
समाज से विनम्र निवेदन

1- केंद्रीय स्तर पर 'आजीवन सदस्य'- (अवधि 10 वर्ष) - कुल शुल्क (जैन गजट के शुल्क 9,900/- सहित) रु. 11000/- जैन गजट साप्ताहिक मुख पत्र 10 वर्ष तक भेजा जायेगा।

2- साधारण आजीवन- महासभा की प्रांतीय आजीवन सदस्यता- 10 वर्ष-1100/-(ग्यारह सौ) रूपये। इसके द्वारा बने सदस्यों को संस्था का साप्ताहिक मुख पत्र जैन गजट 10 वर्ष तक डिजिटल रूप में भेजा जायेगा।

3- 'मंदिर/संस्था सदस्यता'- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा में दिगम्बर जैन मंदिर एवं दिगम्बर जैन सामाजिक संस्थाओं की सदस्यता हेतु 5100/- रुपए। इसके अंतर्गत बने सदस्यों को महासभा द्वारा प्रकाशित जैन गजट साप्ताहिक डाक द्वारा 10 वर्ष तक भेजा जायेगा तथा सदस्य बनने वाली दिगम्बर जैन मंदिर/दिगम्बर जैन सामाजिक संस्था का नाम व स्थान जैन गजट में एक बार प्रकाशित किया जायेगा। यह सदस्यता केन्द्रीय स्तर पर होगी तथा इनके द्वारा (मंदिर/संस्था द्वारा महासभा सदस्यता फार्म के साथ) नाम आने पर एक प्रतिनिधि को संस्था का केन्द्रीय सदस्य मनोनीत किया जायेगा। यह राशि पीएनबी राजेन्द्रनगर ब्रांच लखनऊ (उ. प्र.) पिन कोड- 226004 में 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' के सेविंग एकाउंट नंबर 2405000100033312 में जमा किया जा सकता है, कार्यालय में नगदी दिया जा सकता है, या चेक, मनीऑर्डर, बैंक ड्राफ्ट या ऑनलाईन RTGS/NEFT के लिए, IFS CODE-PUNB 0185600 जमा कराकर तथा सदस्यता फार्म भरा हुआ भेजकर सूचित करें।

Scan And Pay

आप घर बैठे अपने मोबाइल फोन के किसी भी पेमेंट एप से "स्कैन एंड पे" द्वारा उक्त सदस्यता राशि भेजकर कृपया सूचित करें।

महीपाल पहाड़िया, जालंधर
अध्यक्ष-सदस्यता विकास उप समिति
मोबा. 8000007783

संदीप जैन, गुरुग्राम
मंत्री- सदस्यता विकास उप समिति
9810085563

सिद्धक्षेत्र गिरनार पर जैनों के साथ हो रहे अन्याय के विरोध में भारत के सबसे बड़े सामाजिक पर्व दीपावली पर पहली बार हजारों संतों-श्रावकों का सामूहिक अनशन

शरद जैन

दिल्ली। विश्व के इतिहास में संभवतः ऐसा पहली बार हुआ, जब किसी राष्ट्र के सबसे बड़े सामाजिक त्यौहार पर उसी देश के सबसे प्राचीन धर्म के अनुयायियों को अनशन करने को मजबूर होना पड़ा हो और ऐसा हुआ विश्व के सबसे बड़े धर्म प्रधान देश, सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश 'भारत' में, जिसके प्रधानमंत्री जी ने 'वसुधैव कुटुम्बकम' की पहचान पूरे विश्व में बनाई है। हां, वही देश भारत, जिसका नाम उसी जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथजी के ज्येष्ठ पुत्र चक्रवर्ती भरत के नाम पर पर पड़ा, उसी धर्म के संतों-श्रावकों ने इस वर्ष दीपावली, यानि 12 नवंबर 2023 को अन्न तो क्या, जल की एक बूंद ग्रहण नहीं की। वह अनशन 24 घंटे नहीं, बल्कि 46-47 घंटे का रहा, क्योंकि संतों ने 11 नवंबर को प्रातः 11 बजे आहार पूरा कर, फिर 13 नवंबर को 10 बजे के बाद ही आहार लिया। हां, जब पूरा देश मिठाई खाने-खिलाने में लगा था, रेस्तरां, खाने के स्टालों पर, हलवाइयों की दुकानों पर लोग टूट पड़ते हैं, तब अपने तीर्थ पर अपने ही लोगों को दर्शन, पूजन व अधिकार से वंचित करने, अदालती आदेश की अवमानना करने, दर्शन करने वालों पर तलवार आदि हथियार उठाकर जान लेने के कोशिशें, पर प्रशासन व पुलिस की गहरी चुप्पी व मौन के विरोध में श्रावकों ने भी दिवाली को 'काला दिवस' रहने दिया। किसी का उपवास, कोई आयम्बिल, कोई प्रोषध, कोई एकासन करके भगवान से प्रार्थना ही करता रहा। हैरत तो तब हो गई कि जब उस दिवाली के दिन ऋषभ विहार, दिल्ली में आचार्य श्री सुनील सागरजी का प्रवचन चल रहा था कि देशकी सबसे बड़ी न्यूज एजेंसी 'पीटीआई' अनशन की सत्यता जानने के लिए वहां कैमरे सहित पहुंच गई। उन्होंने रिकॉर्डिंग अपने पोर्टल पर लाइव करते हुए अनशन की सत्यता जानने के लिये आचार्य श्री के साथ वहां 55 संतों में से तीन-चार व कई श्रावकों से भी सवाल किये और उन्होंने पाया कि सभी संत व अनेक श्रावक भी अनशन कर रहे हैं। आचार्य सुनील सागर जी ने कहा जिस तरह गिरनार जी पर घटनाएं घटी हैं, जिस तरह का माहौल बना है वह समाज और देश के लिए अच्छा नहीं है। श्रावक - श्रविकाओं को बराबर दर्शन पूजन का अधिकार मिले, हम सब मिलजुल कर भगवान की आराधना करें। सभी को सद्बुद्धि मिले, किसी के साथ वैर भाव, दुर्व्यवहार ना हो परमात्मा उन्हें सद्बुद्धि दे, इसलिए हम साधु उपवास कर रहे हैं, एकासन कर रहे हैं, सारे लोग भी एकासन - उपवास कर रहे हैं ताकि सभी के भीतर सुविचार पैदा हो, सौहार्द और भाईचारा बना रहे। सभी श्रावक - श्रविकाओं को दर्शन, पूजन करने, लाडू चढ़ाने का समान अधिकार मिले और वे सभी भगवान की आराधना उसी ढंग से कर पायें जैसे पूर्व में करते थे। बात यह है कि क्या इसमें कुछ गलत नहीं हो रहा है? अगर वहाँ की मूर्ति घिस दी जाएगी, तो पुरातत्व को कितना बड़ा नुकसान होगा, वहाँ कुछ निर्माण करना है तो पर्यावरण और तीर्थ के लिये कितना बड़ा घातक काम होगा। वहां यदि धमकी दी जाती है, तो लोगों में धर्म के प्रति आस्था कैसे पैदा होगी? कुछ ऐसी चीजें हैं, जो हमारे देश को, हमारे धर्म को, हमारी आस्था को, हमारे पुरातत्व को नुक्सान पहुंचाती हैं। उपाध्याय श्री शशांक सागरजी ने कहा कि अनशन का हमारा कोई बड़ा उद्देश्य नहीं है। सिर्फ इतना सा उद्देश्य है कि जो हमारा अधिकार है वो हमें मिले। भगवान नेमिनाथ हमारे तीर्थंकर हैं, हमारी पूजा - आस्था का केंद्र हैं। कुठाराघात ना हो, इसीलिए हम सभी ने अनशन - उपवास किया है। नेमिनाथ गिरनार क्षेत्र हमारा है, उस पर पूजा, उपासना, आराधना करने का अधिकार हमारा है, हमको मिलना चाहिए। इसके लिए जैन संतों और श्रावकों ने आज उपवास रखने का भाव रखा है, जो हमारा पुरातत्व है उस पर जो हमारा अधिकार है, वो हमको मिलना ही चाहिए, ऐसा हम चाहते हैं। इसलिए हम सभी ने अनशन किया है। आर्यिका श्री सुदृढ़मति माताजी ने कहा कि यहाँ आस्था भक्ति में शक्ति जगाने का प्रयास संतों को करना पड़ रहा है। अनशन एक भूख हड़ताल नहीं, अनशन एक तप है। यही नहीं उनकी आवाज देश के हर कोने में पहुंचे, तो आर्यिका माताओं ने अपनी-अपनी बात गुजराती, मराठी, अंग्रेजी व कन्नड़ में भी रखी। आचार्य श्री सुनील सागरजी महामुनिराज के संघ में मुनि श्री संतृप्त सागरजी कठोर अनशन कर रहे हैं और उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। तो क्या शासन-प्रशासन कोई उचित कार्यवाही करने से पहले क्या एक और संत की बलि चाहता है?

आचार्य श्री विशुद्धसागर जी पुरस्कार 2023 से मुनिभक्त, समाजश्रेष्ठि तेजकुमार जैन विनायका उज्जैन हुए अलंकृत

श्रमणरत्न मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में हुआ आयोजन

उज्जैन। परम पूज्य श्रमणरत्न मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज, परम पूज्य मुनि श्री प्रणतसागर जी महाराज के सान्निध्य में उत्कर्ष समूह द्वारा 14 नवम्बर 2023 को कालिदास अकादमी विश्वविद्यालय परिसर उज्जैन में आचार्य विशुद्ध सागर पुरस्कार 2023 पुरस्कार समर्पण समारोह का आयोजन किया गया। आचार्य श्री विशुद्धसागर जी पुरस्कार 2023 मुनि भक्त, समाज श्रेष्ठि तेजकुमार जैन विनायका उज्जैन को दिगम्बर साधुओं की वैयावृत्ति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान करने के लिए प्रदान किया गया। इस मौके पर मुनिभक्त तेजकुमार जैन विनायका व परिवार को विशाल प्रशस्ति- पत्र, प्रतीक चिन्ह, माला, मुकुट, श्रीफल, शाल आदि के साथ इक्कीस हजार रुपये की राशि के साथ बा. ब्र. साकेत भैया, ब्र. राकेश भैया, उत्कर्ष समूह के निर्देशक डॉ. सुनील संचय ललितपुर, समन्वयक राजेन्द्र महावीर सनावद, पंडित अखलेश शास्त्री रमगढा ने प्रभावना पुरुषोत्तम आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी पुरस्कार 2023 से अलंकृत किया। संचालन डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर ने किया। उल्लेखनीय है कि उक्त पुरस्कार मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज की प्रेरणा से प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है।

अंतर्मना साइकिल यात्रा

साधना शिरोमणि तपाचार्य अंतर्मना आचार्यश्री 108 प्रसन्न सागर जी महाराज के परम मंगल आशीर्वाद से आज के आधुनिक युग में जहां विभिन्न के प्रकार यातायात के समस्त साधनों की उपलब्धता होने के पश्चात भी एक अनूठी पहल जो कि आपने आप में सराहनीय हैं। कुंजवन उदगांव से मांगीतुंगी साइकिल के माध्यम से यात्रा जिसकी दूरी लगभग 700 किमी है। जिसे 5 दिवस में गुरूदेव अंतर्मना के आशीर्वाद से अपनी यात्रा पूर्ण करने का लक्ष्य लेकर साइकिल सवार रवाना हुए।

भगवान महावीर मोक्ष कल्याणक पर निर्वाण लाडू अर्पित

कांग्रेस प्रत्याक्षी दिनेश गुर्जर ने लिया आशीर्वाद

मुरैना (मनोज नायक)। भगवान महावीर स्वामी का 2550वां मोक्ष कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने आज से 2550 वर्ष पूर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या को मोक्ष प्राप्त किया था। भगवान महावीर स्वामी के मोक्ष प्राप्ति दिवस पर निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। मोक्ष कल्याणक के पावन पर्व पर सभी जैन मंदिरों में आकर्षक सजावट की गई थीं। प्रातःकालीन बेला में सभी साधर्मी महिला पुरुष बच्चों ने भगवान महावीर स्वामी की विशेष पूजा अर्चना की। सर्वप्रथम भगवान महावीर स्वामी का स्वर्ण कलशों से जलाभिषेक, शांतिधारा करने का सौभाग्य महेंद्रकुमार शास्त्री परिवार एवं पंकज जैन मेडिकल परिवार को प्राप्त हुआ। प्रथम निर्वाण लाडू अर्पित करने का सौभाग्य शीलचंद बाबूजी दिनेश जैन परिवार को एवं 24 अन्य भक्तों को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर श्री जिनेन्द्र प्रभु के चरणों में राकेश कुमार लोकेश जैन नायक परिवार द्वारा चांदी का सिंहासन भेंट किया गया। निर्वाण महोत्सव की सभी धार्मिक क्रियाएं महेंद्रकुमार शास्त्री मुरैना, संजय शास्त्री सिहोनिया, मनोज शास्त्री भिण्ड ने सम्पन्न कराई। संगीतकार मनीष जैन एंड पार्टी मुरेना द्वारा अपने संगीतमय भजनों द्वारा भगवान महावीर स्वामी का गुणगान किया गया। भक्तिमय भजनों पर सभी नर नारियों ने भक्तिपूर्ण नृत्य किया। अष्ट द्रव्य से भगवान का पूजन किया गया। मोक्ष कल्याणक के अवसर कांग्रेस प्रत्याशी दिनेश गुर्जर ने जैन मंदिर में उपस्थित होकर भगवान महावीर स्वामी को नमोस्तु निवेदित कर आशीर्वाद प्राप्त किया एवं उपस्थित सभी समाज बंधुओं को दीपावली एवं निर्वाण दिवस की शुभकामनाएं दीं। जैन समाज की ओर से मंदिर कमेटी के पदाधिकारियों ने श्री गुर्जर का सम्मान किया। इस अवसर पर प्रेमचंद जैन, राजेंद्र भंडारी, मंत्री धर्मेंद्र जैन एडवोकेट, शीलचंद जैन, नत्थीलाल जैन, उपाध्यक्ष अभिषेक जैन टीटू, कोषाध्यक्ष राजकुमार जैन राजू, अनिल जैन व्याख्याता, पदमचंद चैधरी, मनोज नायक, सुनील जैन पुच्ची, ब्रजेश जैन दादा, विवेक जैन विक्की, शैकी जैन, सीए गौरव जैन, पारस जैन, मुन्नी साहुला, ममता जैन, सरला जैन सहित सैकड़ों की संख्या में साधर्मी बंधु, माता बहिनें उपस्थित थीं।

नींद का ज्यादा आना भी दर्शनावरणी कर्म का उदय है

- आचार्य प्रमुख सागर जी

गुवाहाटी। आचार्य श्री प्रमुख सागर महाराज द्वारा आज आठों कर्मों में से ज्ञानावरणी कर्म का विवेचन हुआ। तत्पश्चात दर्शनावरणी कर्म का उपदेश दिया और कहा कि दर्शनावरणी कर्म हमें दो प्रकार से बड़ा बनाता है- पहला आंखों से ठीक नहीं देख पा रहे हैं उसे चक्षु दर्शन कहते हैं और आंखों को छोड़कर शरीर के जितने अंग उपांग हैं अचक्षु दर्शन हैं। नींद का ज्यादा आना भी दर्शनावरणी कर्म का उदय है और कहा कि नींद में भी ऐसे-ऐसे कार्य कर जाते हैं जो कल्पना के परे होते हैं। जैसे नींद में उठकर लोगों का सामान चुराना, चोरी करना या किसी का मरण भी करके आ जाना। आज की समस्या यह है कि जिनकी आंखें हैं लेकिन फिर भी वह सही देखना ही नहीं चाहता है। जिनकी आंखें नहीं हैं वह देख ही नहीं पाते हैं। आपने एक उदाहरण से समझते हुए कहा कि धृतराष्ट्र की आंखें नहीं थी लेकिन गांधारी ने अपनी आंखों में पट्टी क्यों बांधी। अगर वह पट्टी नहीं बांधती तो उसके पुत्र इतना गलत नहीं करते। दर्शन यानी चक्षु यानी आंख जब आंखों से सही-गलत देखा जा सकता है, तो सही समय में आंखें बंद क्यों हो जाती है। यह उक्त बातें भगवान महावीर धर्म स्थल में विराजित आचार्य प्रमुख सागर महाराज ने एक धर्म सभा में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहीं। **-सुनील कुमार सेठी, संवाददाता**

जन्म भूमि जतारा में हुआ जतारा के लाल आचार्यश्री विमर्श सागर जी का 51वाँ विमर्श उत्सव

मैं जहाँ भी देखता हूँ, मुझे सब अपने ही अपने दिखाई देते हैं : भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्श सागर जी महामुनि

अशोक जैन, संवाददाता

जतारा। बुन्देलखण्ड की धर्मनगरी, जन्मभूमि जतारा में हुआ नगर जतारा गौरव भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्श सागर जी महा मुनिराज का 51वां ''विमर्श उत्सव''। आचार्य श्री विमर्श सागर जी महा मुनिराज के ससंघ सानिध्य में गुरुवर की जन्म भूमि पर देश भर से सैकड़ों भक्तों ने गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरुवर की पद रज को अपने माथे से लगाया।

15 नवंबर प्रातःकाल की मांगलिक बेला में आचार्य श्री के संघस्थ शिष्यों ने गुरु चरणों की पूजा-आराधना, भक्ति कर अपने गुरुवर का जन्मोत्सव मनाया। आचार्य श्री के 51 वें अवतरण दिवस पर देशभर से 22 परिवारों ने श्री भक्तामर महार्चना का परम सौभाग्य प्राप्त किया। साथ ही अर्धशतक श्रद्धालुओं ने अतिशयकारी श्री 1008 आदिनाथ भगवान के मस्तक पर छत्र चढ़ाने का परम सौभाग्य प्राप्त किया। इस ऐतिहासिक दिन पर गुरुवर के गृहस्थावस्था के ज्येष्ठ भ्राता श्री राजेश जैन एवं लघु भ्राता श्री चक्रेश जैन को गुरुवर की आहारचर्या सम्पन्न कराने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। भारतीय जैन संगठन तहसील अध्यक्ष एवं जैन समाज उपाध्यक्ष अशोक कुमार जैन ने बताया कि नगर गौरव का नगर में ही जन्म महोत्सव मनाने को जतारा नगर का प्रत्येक नागरिक आतुर था। नगर वासियों ने आचार्य गुरुवर के चरणों में मस्तक झुकाकर अपना सौभाग्य बढ़ाया। दोपहर कालीन बेला में शुभारंभ हुए महोत्सव में टीकमगढ़ के भजन सम्राट रुपेश जैन ने आचार्य श्री के चरणों में भाव सुमन समर्पित करते हुए कहा- हे गुरुदेव! देशभर के लाखों भक्तगण यही भावना करते हैं, आप चिरायु हों, हम सबकी आयु में से एक एक वर्ष घटकर गुरुदेव आपकी आयु में मिल जाए। पूज्य आचार्य श्री ने स्वर्णिम जन्मोत्सव पर कहा - ''मैं जहाँ भी देखता हूँ, मुझे सब अपने-अपने ही नजर आते हैं। गुरुवर के 51वें अवतरण दिवस पर संघस्थ बाल ब्रह्मचारिणी विशु दीदी सहित समस्त त्यागी वृत्तियों ने गुरु चरणों में भगवती जिन दीक्षा हेतु निवेदन किया। ज्ञात हो कि परम पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज के कर कमलों से अभी तक दीक्षित 14 मुनिराज, 9 आर्यिका एवं 3 क्षुल्लिका साधनारत हैं। जबकि 5 संयमी साधक, साधना का फल समाधि के रुप में प्राप्त कर चुके हैं। जतारा नगर गौरव के जन्मोत्सव पर नगर में 51 किलो मावा के केक का एवं मिष्ठान का वितरण किया गया। संध्या बेला में 1008 दीपकों से आचार्यश्री की महा-आरती संपन्न की गई एवं बा. ब्र. विशु दीदी द्वारा आचार्य श्री पर प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता सम्पन्न की गई। इस सुअवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष अनुराग राम जी नायक, नवीन साहू, रमेश पाठक, किशान पटेरिया, महेंद्र टानगा, राजीव मोदी, सचिन जैन, सहित नगर के राजनैतिक क्षेत्र से आए गुरुभक्तों ने अपना अर्घ गुरु चरणों में समर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त किया। कार्यक्रम में जतारा के श्रावकों के साथ-साथ एटा, महमूदाबाद, दिल्ली, आगरा, टीकमगढ़, मथुरा आदि कई जगह के श्रावक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन पत्रकार अशोक कुमार जैन द्वारा किया गया।

बड़ी चीजों का मैं छोटा सा व्यापारी

- डॉ. निर्मल जैन (से. नि. न्यायाधीश)

पत्रकार/लेखक कहलाने के लिए कुछ राष्ट्रीय पत्रों में छप जाना ही पर्याप्त नहीं। मैं भी कोई न कोई लेखक हूं, न पत्रकार, न कलमकार। मैं तो सिर्फ जैन कुल में जन्मा एक वणिक पुत्र हूँ, व्यापारी हूं। न विद्वान हूं न उपदेशक हूं, न प्रवचनकर्ता हूं। मैं तो शुद्ध व्यापारी हूं, व्यवहारी हूं। एक खाली लिफाफा धारी हूँ, उसे ही भरने में तल्लीन रहता हूँ। हां प्रकृति ने मुझे एक विधा दी है, मेरी कलम को शक्ति दी है कुछ नया सोचने की और उसको अभिव्यक्त करने की सामर्थ्य दी है। ऐसी निर्भीक वाक्पटुता हासिल की है कि मैं उन अदृश्य और अमूल्य वस्तुओं, पदार्थ को भी बेच देता हूं जिनकी कोई सांसारिक कीमत हो ही नहीं सकती और न वह बाजार की विषय-वस्तु हो सकती है। उसे भी बाजार में सजा देता हूँ। क्योंकि मैं ठहरा बड़ी चीजों का छोटा सा विशुद्ध व्यापारी।

मैं उस पवित्र विचारधारा का व्यापारी हूं जिसके बारे में मुझे भी नहीं पता कि वह कि न पुस्तकों में, ग्रन्थों में लिखी है। मैंने कभी पढ़ी भी नहीं तो समझने का प्रश्न ही नहीं उठता। यह मेरी कलमकारी की महिमा की विशेषता है कि बिना पढ़े, समझे मैं जो कुछ उस विचारधारा के बारे में बोलता, लिखता हूँ लोग सम्मोहित होकर उसके बारे में आंख मूंद कर विश्वास करते हैं। मैं शब्दों का ऐसा जादूगर हूँ कि मेरे कहने पर जो कुछ वो करने जा रहे हैं, जानते हैं कि यह उस विचारधारा के कतई विपरीत है। फिर भी नर्क और धर्मनिंदा का भय दिखा जिन रस्तों पर मैं उन्हे धकेलता हूँ, आँख मूँद कर फिसलते जाते हैं। एक मुद्दत से मेरी आड़त पर जो कुछ भी महंगे दामों पर बिकता आ रहा है वो एक पवित्र विचारधारा का सौदा ही तो है। उस पवित्र विचार धारा के सूत्रों को आकर्षक पैकिंग में सजा कर, भक्ति को भक्तिरस में डुबोकर बेचा है। जहां कहीं तेरा जिक्र आता है तो तेरे जिक्र पर किस्से कहानियों का मुलम्मा चढ़ा कर बेच देता हूँ। जिन्होंने तेरी राह चलकर अपने आचरण से जीवन सजाया है, मुक्ति का मार्ग दिखाया है। उनकी बात आती है तो वो बातें चमत्कारों में लपेट कर बेच देता हूँ। उनके तप और त्याग की यादें आती हैं तो उन यादों को भाव की प्रधानता से शरीर की क्रियाओं में बदल आधुनिकता की चाशनी मे पाग कर बेच देता हूँ। बिना किसी पूंजी लगाए धंधा कर, बिना नुकसान का जोखिम उठाए तेरा नाम और तेरे प्रवर्तकों के नाम की बोलियों से मैंने अपने लिए बहुत कुछ मुनाफा कमाया है। पदवियों और उपाधियों का अंबार लगाया है। उन वीतरागी के लिए अपने नाम का शिलापट्ट लगाकर वैसा ही महल बनाया है जिनका वे त्याग कर इस परम पद को प्राप्त हुए। जयकार तेरी गले में हार मेरी। यह सब करते-करते मैं बहुत परिपक्व हो चुका हूँ, अभ्यस्त हो चुका हूँ। कोई शब्द बाण ऐसा नहीं जो मेरी मोटी चमड़ी पर असर करे। फिर भी कभी जब मेरे अंदर का विवेक जागता है तो मुझको यह क्यों लगता है कि मेरे अंदर का व्यापारी तेरे सब कुछ के नाम पर तुझे नहीं, खुद अपने को ही बेच आया है। अब मैं वो नहीं रहा जिसके निमित्त मुझे जन्म मिला था। लेकिन यह छोटा सा सोच इन असीम सांसारिक ऐश्वर्यों, उपाधियों, पदवियों की तुलना में बड़ा बचकाना सा लगता है। मेरी करनी कैसी भी हो, मैं सोचता बड़ा हूँ। क्योंकि मैं बिजनेसमैन हूं। बड़ी चीजों का मैं छोटा सा व्यापारी हूं। हे वीतरागी !, हे पवित्र आगम ! सत्य अभिव्यक्ति पर निर्मल को माफ कर देना।

नैनागिरि में हुई लाडू सजाओं प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को किया सम्मानित

रत्नेश जैन रागी, संवाददाता

बकस्वाहा (छतरपुर)। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाणोत्सव व गणधर गौतम स्वामी के केवलज्ञान महोत्सव एवं दीपोत्सव के पावन अवसर पर श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र (रेशंदीगिरि) नैनागिरि की पावन भूमि के गिरिराज स्थित पार्श्वनाथ चैबीसी जिनालय में देश के हजारों श्रद्धालु भक्तों ने भक्ति भाव से तीर्थराज की वंदना, पूजन अर्चन के साथ शांतिधारा कर निर्वाण लाडू समर्पित कर पुण्यार्जन किया। इस अवसर पर लाडू सजाओ प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त पुरस्कार के साथ ही सांत्वना पुरस्कार से प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। लाडू सजाओ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान श्रीमती सोना आशी जैन दलपतपुर, द्वितीय स्थान श्रीमती अर्चना नवीन चंदेरिया दलपतपुर, तृतीय स्थान श्रीमती रानी जैन मकरोनिया सागर तथा चतुर्थ स्थान पर कु. रजनी जैन दलपतपुर को पुरस्कृत किया गया। इसके साथ ही सांत्वना पुरस्कार कल्पना दीनदयाल नगर सागर, अर्चना मुकेश सांधेलिया, विमला-मोतीलाल सांधेलिया दलपतपुर, विमला जैन बम्हौरी, कु. दीक्षा जैन दिशा मझगुवां, विद्या-सुरेंद्र सांधेलिया, सुनीता अमरेन्द्र मोदी , कल्पना लोहिया, संध्या जैन बम्हौरी को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर कु. आशी जैन पुत्री देवेंद्र कुमार दलपतपुर वाले नैनागिरि जिन्होंने आगरा में पूज्य सुधा सागर जी महाराज के सानिध्य में समयसार ग्रंथ प्रशिक्षण में तृतीय स्थान प्राप्त किया है को भी सम्मानित किया गया। इस लाडू सजाओ प्रतियोगिता में अशोक नायक अरिहंत हॉस्पिटल बण्डा, विनोद जैन एलआईसी सागर, राहुल जैन इंदौर, सीएमए आशीष जैन पन्ना, चंद्र कुमार बम्हौरी ने निर्णायक की भूमिका अदा की।

उज्जैन में 'सुरभित मैत्री' अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी सम्पन्न

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

उज्जैन। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक नगरी उज्जैन के श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ऋषिनगर, उज्जैन मध्य प्रदेश में चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के परम शिष्य श्रमण मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज एवं मुनि श्री प्रणतसागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत के निर्देशन व डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर के संयोजकत्व में 'सुरभित मैत्री' अनुशीलन (भावना द्वात्रिंशतिका -आचार्य अमितगति पर आधारित मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज की कृति 'सुरभित मैत्री' पर आधारित) दो दिवसीय राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन 29 और 30 अक्टूबर 2023 को ऐतिहासिक सफलता के साथ संपन्न हुआ। इस संगोष्ठी में डॉ. शीतलचंद्र जैन जयपुर, डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत, ब्र. चक्रेश भैया, डॉ. नरेंद्र जैन टीकमगढ़ , प्रोफेसर श्रीयांस सिंघई जयपुर, पंडित विनोद जैन रजवांस, डॉ. सुरेंद्र जैन भारती बुरहानपुर, डॉ. ज्योति जैन खतौली, पंडित पवन दीवान सागर, डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर, श्रीमती अनुभा जैन (संयुक्त कलेक्टर) विदिशा, राजेंद्र जैन 'महावीर' सनावद, डॉ. जयेंद्र कीर्ति जी उज्जैन, डॉ. पंकज जैन इंदौर, डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, डॉ. सोनल कुमार जैन दिल्ली, डॉ. बाहुबली जैन इंदौर, पं. मुकेश जैन शास्त्री गुड़गांव, डॉ. ममता जैन पुणे, डॉ. राजेश जैन शास्त्री ललितपुर, डॉ. आशीष जैन शास्त्री बम्होरी, पंडित शीतलप्रसाद जैन ललितपुर, पं. अखिलेश जैन शास्त्री रमगढ़ा, पं. जिनेन्द्र जैन उज्जैन, पंडित अनिल शास्त्री सागर, पंडित विवेक शास्त्री उज्जैन, मनीष जैन विद्यार्थी सागर, विजय शास्त्री शाहगढ़ आदि विद्वान सम्मिलित हुए।

धर्म जागृति संस्थान के योगेश राष्ट्रीय अध्यक्ष, भूपेंद्र राष्ट्रीय महामंत्री नियुक्त

दिल्ली (मनोज नायक)। अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान की राष्ट्रीय साधारण सभा की बैठक परम पूज्य आचार्य श्री वसुनन्दी जी महामुनिराज के सानिध्य में आयोजित कर आगामी तीन वर्षीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी हेतु पदाधिकारीयों का चयन किया गया, जिसमें सर्वसम्मति से योगेश जैन (अरिहंत प्रकाशन) मेरठ को राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं मुरेना निवासी वरिष्ठ एडवोकेट करनसिंह जैन के सुपुत्र इंजी भूपेंद्र जैन ग्रीन पार्क दिल्ली को राष्ट्रीय महामंत्री नियुक्त किया गया।धर्म जागृति संस्थान से प्राप्त जानकारी के अनुसार राष्ट्रीय पदाधिकारीयों में निकुंज जैन दिल्ली एवं विनोद जैन मिलेनियम को राष्ट्रीय संरक्षक व डॉ. नीरज जैन को राष्ट्रीय चेयरमैन एवं नीरज जैन जिनवाणी चैनल आगरा को राष्ट्रीय कार्यवाहक अध्यक्ष नियुक्त किया गया। साथ ही राजकमल सरावगी ग्रीन पार्क को राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, रमेश गर्ग जैन बोलखेड़ा राष्ट्रीय संयोजक, अतुल जैन भायंदर मुम्बई को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, संजय जैन बड़जात्या को राष्ट्रीय प्रचार मंत्री, संजय जैन कागजी दिल्ली को राष्ट्रीय संगठन मंत्री नियुक्त किया गया।

संस्थान के नवनियुक्त राष्ट्रीय महामंत्री भूपेंद्र जैन ने बताया कि अतिशीघ्र राष्ट्रीय कार्यकारिणी का विस्तार किया जाएगा। इस अवसर पर आचार्य श्री वसुनंदी महाराज ने कहा कि नवीन कार्यकारिणी के विस्तार के साथ ही धर्म बचाओ - धर्म सिखाओ नारे को बुलंद करते हुए युवाओं में धार्मिक भावनाओं की वृद्धि संस्थान द्वारा की जाएगी।

माँ श्रीमती कमला देवी जी कोठारी पाण्डिचेरी

निवासी का देह परिवर्तन

आत्मा के गीत गाते, गुनगुनाते माँ चल दिए
सहजता के गीत गाते, सहजता से चल दिए
किस तरह से गीत गाऊँ गुण गिनाना कठिन है
शब्दों में ताकत नहीं गुण, गीत गाना कठिन है।

स्व. श्रीमती कमला देवी जी कोठारी

धर्मपत्नी स्व. श्री मेघराज जी कोठारी

ऊपर जिसका अंत नहीं उसे आसमां कहते हैं, जहाँ में जिसका अंत नहीं उसे माँ कहते हैं।
जीवन ज्योति भले ही बुझ गई, प्रेरणा आलोक सदैव रहेगा।

-: श्रद्धावनत :-

गजराज-पुष्पा, राजकुमार-सीमा (पुत्र-पुत्रवधु)
सरोज देवी-पद्म जी मुम्बई, सन्तोष जी पाटोदी पाण्डिचेरी, ललिता जी-जयकुमार जी सोगानी पाली, गुणमाला जी, महेन्द्र जी पाटनी नसीराबाद (पुत्री-दामाद) भरत-अर्चना, सुशील-राखी, ऋषभ-मेघा, निलेष (पौत्र-पौत्रवधु)
सुमित्रा, पंकज जी चेन्नई, रूचि-मयूरजी किशनगढ़ (पौत्री-पौत्री जवाई)
इशिका, हर्षिता, तुषार, प्रज्ञा, अद्विक, अद्वैत (पड़पौत्र-पड़पौत्री)
चहेती, आर्जव, माहिर एवं समस्त कोठारी परिवार पाण्डिचेरी (पड़दोयता, पड़दोयती)

-श्रीमती अर्चना भरत कोठारी, पाण्डिचेरी

वर्तमान में चिंतनीय विषय : शौक या मनोरंजन–धनवान या संस्कारवान होना चाहिए

-डॉक्टर अरविन्द प्रेमचंद जैन, भोपाल

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी के साथ विवेकशील जानवर है जिसमें अपने काम करने की असीम सम्भावनायें है। जानवर से मेरा तात्पर्य इतना है कि प्रत्येक जानवर अपने धर्म, संस्कार का पालन करता है और मनुष्य सब जानवरों के गुणों को अंगीकार कर रहा है और करता था और निश्चित रूप से करेगा।

सामाजिक प्राणी होने के कारण उसे अपने काम/व्यापार, सेवा के बाद मनोरंजन करना चाहिए जिससे उसे नयी ऊर्जा भी मिलती है और कुछ क्षण के लिए वह अपनी नियमित जिंदगी से अलग होकर गाफिल हो जाता है, वैसे मनोरंजन के कई साधन पूर्व में राजा, महाराजा, धनी वर्ग या गरीब वर्ग करते थे इसमें कोई सीमा नहीं होती है और किसको क्या मनोरजन पसंद है सबकी अपनी अपनी मान्यता होती है और शौक व्यक्तिगत के साथ अपनी मित्रता में भी होती है। हमारे देश में ऐसे ऐसे विचित्र किन्तु सत्य राजाओं के शौक और मनोरंजन का इतिहास भरा पड़ा है, हर राजा चाहे जूनागढ़ के राजा ने शादी में पूरे देश से राजाओं महाराजों को बुलाया था। बीकानेर के महाराजा अपनी महफिल में अपने मंत्रियों की बीबियों से बदल-बदल कर आनंद लेते थे। भरतपुर के राजा अपने बगीचे में पानी में अनेक सुंदरियों को नग्न खड़ा करके मनोरंजन करते थे और कई ऐसे राजा रहे जिनको कष्टों को देने का शौक रहता था। हमारे देश और विदेश में अनेकों कवि हुए जो लड़कियों के कॉलेज के सामने खड़े होकर छेड़ते थे और पिटाई होने पर कविता लिखते थे, ये सब बातें सुनी-सुनी और इतिहास के पन्नों में दर्ज है, उससे हमें जानकारी मिली। वर्तमान में कुछ ऐसे तथाकथित रहा साब है जो अपने दुश्मन को मगरमच्छ वाले कुंड में फिकवां देते है और कई संत महंत अभी अभी प्रकाश में आये जिन्होंने मनुष्यता की पराकाष्ठा कर दी मानवता उनसे कोसों दूर है। शौक/मनोरंजन अपनी-अपनी व्यक्तिगत मानसिकता पर आधारित होती है और इसमें किसी को किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है और न होना चाहिए कारण ये शौक अर्थ यानि धन पर आधारित होते है जिसका जितना स्तर उसका उतना धन का खरच और कहा भी गया है कि शौक पूरा करने में कंजूसी का कोई मापदंड नहीं होना चाहिए। पृथ्वीराज चैहान ने संयोगिता के प्यार के कारण अपहरण किया, आपने प्राणों को जोखिम में डाला। बात यहाँ से उपजी कि वर्तमान में हमारे शासक, मंत्री, सांसद, विधायक, सचिव, कलेक्टर, उद्योगपति या धनवान, कलाकार आदि अपने शौक बहुत स्तरीय करते है उनका कोई मुकाबला नहीं होता, न कर सकते है। उनके सब या अधिकांश कार्यक्रम प्रायोजित होते है और उनमें उनकी उपस्थिति का होना अनिवार्य हो जाता है और वहां पर लेग, पेग, एग का चलन सामान्य होता है और माना भी जाता है। पहले भोग, भोजन ध्यान एकांत में होते थे अब ये सामूहिक होने लगे लगे, इसमें भी समाज को कोई असुविधा नहीं है कारण अधिकारी या व्यापारी या अन्य सब मनोरंजन करते है और करना भी चाहिए जिससे जीवन में सरसता का बोध होता है और कोई क्या कर रहा है, इससे पूरा समाज बिगाफिल रहता है। वैसे हर व्यक्ति हर दिन अपने घर में बलात्कार करता है, शराब पीता है, मांसाहार करता है पर जब ये बात उजागर होती है तब कैसा लगता है। अभी तक ये सब होते है यह माना जाता है पर आज समाचार पत्र में उनकी छवियां देखीं तब लगा मनोरंजन या शौक अर्थवान यानि पैसों का हो गया संस्कारविहीन हो गया। इस समाचार से यह बात जो पहले छिपी होती थी वो उजागर हुई और जो हम समाज के लिए आदर्श के रूप में माने जाते थे या है उनका चेहरा या नकाब सामने आ गया। समाज को इससे विशेष कोई मतलब नहीं, कारण ये कोई नयी चीज नहीं है पर इससे उनके चरित्र की जानकारी उनके परिवार, नाते रिश्तेदार के साथ समाज को भी मिल गई, जब समाज का मार्गदर्शक का ऐसा चरित्र है तब उनके चरित्र का प्रभाव समाज को प्रभावित किये बिना न रहेगा और इसके कारण अन्य को भी इस कार्य के प्रति प्रेरणा मिलती है। शौक शॉकजन्य न हो और मनोरंजन कुछ हद तक संस्कारवान हो जो समाज को प्रकट हो, समाचार पत्र के माध्यम से हमें मालूम है कि समाज में सब नंगे हैं पर वह नंगपन उजागर होता है उससे बुद्धिजन को कोई परेशानी नहीं होती पर एक विचारणीय/चिंतनीय विषय मिल जाता है। हमारे कृत्य या काम ऐसे हों जो समाज में अच्छे लगें, कारण हम दोगले या बहुरुपिया हो चुके हैं। हम गधे के ऊपर शेर का मेकअप किये समाज को डरा रहे हैं पर रात में वह मेक अप अपने आप धुलकर सामने आ जाता है। वर्तमान दौर में लेग, पेग, एग, घूस बहुत सामान्य है, जैसे हाथी के पाँव में सब पाँव समां जाते हैं, ऐसी ही एक अवगुण से सब अवगुण अपने आप आ जाते हैं, करने वाले शान समझते हैं क्योंकि उनकी नजरों में नशा छाया रहता है और जब कोई गरीब करे तो कहा जाता है वे अपनी औकात नहीं देखते और जो इनसे दूर हैं उसे दकियानूस कहते हैं। अब समझाने का युग हो गया समाप्त पर उपदेश कुशल बहुतेरे का आ गया जमाना। खूब करो मौज, किसी को कोई मतलब नहीं, यदि हो सके तो कुछ पर्दानशीं बन जाओ।

सेम (ब्रॉड बीन्स) : पौष्टिकता से भरपूर

अगर आप भी चाहते हैं कि आप बीमारियों की नजर से बचे रहें और हमेशा फिट और हेल्दी रहें तो अपनी डेली डायट में ब्रॉड बीन्स यानी सेम की सब्जी को शामिल करें। पोषक तत्वों से भरपूर सेम सेहत के लिए कई तरह से फायदेमंद है।

बींस का स्वाद तो चखा होगा लेकिन क्या कभी ब्रॉड बींस जिसे सेम की सब्जी भी कहते है का स्वाद लिया है? बता दें कि यह खाने में स्वादिष्ट होने के साथ-साथ सेहत के लिए भी फायदेमंद होती है। सेम प्रोटीन, फाइबर, विटामिन और खनिज से भरपूर होने के साथ ही वजन घटाने से लेकर पार्किंसन्स जैसे रोगों से निपटने में भी मददगार होती है। इसके अलावा ब्रॉड बींस को हार्ट हेल्थ में सुधार करने और कलेस्ट्रॉल के लेवल को नियंत्रित करने में भी मददगार माना जाता है। पोषक तत्वों से भरपूर सेम एक नहीं, कई स्वास्थ्य समस्याओं को दूर रखने में मददगार है। इसमें फाइबर भी भरपूर मात्रा में होता है जो आपके पाचन तंत्र को बेहतर बनाने और कोलेस्ट्रॉल के लेवल को कम करने में मदद करता है। इसके साथ ही, ब्रॉड बींस में विटमिन बी, फॉलेट, कैल्शियम और सेलेनियम की भी थोड़ी मात्रा होती है। यह आयरन से भरपूर होने की वजह से अनीमिया में भी मददगार होता है क्योंकि यह आपके शरीर में हीमॉग्लोबिन बढ़ाने में मदद करता है। ब्रॉड बींस में फाइबर काफी मात्रा में होता है जो आपके पाचन तंत्र को बेहतर बनाने और कोलेस्ट्रॉल के लेवल को कम करने में मदद करता है। ब्रॉड बींस के नियमित सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह ऐसे यौगिकों से भरपूर ह, जो शरीर में ऐंटीऑक्सिडेंट गतिविधि को बढ़ा सकते है। ऐंटीऑक्सिडेंट शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाते है, जो फ्री रैडिकल्स से लड़ते है। ब्रॉड बींस मैगनीज और तांबे से समृद्ध है, जो हड्डियों के नुकसान को रोकते है। एक अध्ययन में पाया गया कि मैगनीज और तांबे की कमी से हड्डियों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है और कैल्शियम का उत्सर्जन बढ़ सकता है। मनुष्यों पर किए गए अध्ययन से यह भी पता चलता है कि ये दोनों यौगिक हड्डी के लिए महत्वपूर्ण है। बढ़ता वजन आज बहुत से लोगों के लिए चिंता का कारण बन गया है। ऐसे लोग अगर एक्सरसाइज के साथ अगर नियमित रूप से अपने खाने में ब्रॉड बींस का सेवन करें तो यह वजन कम करने में उनकी मदद कर सकता है। एक कप ब्रॉड बीन्स में केवल 187 कैलोरी के साथ 13 ग्राम प्रोटीन और 9 ग्राम फाइबर होता है इस कारण इसे खाने से पेट भरा हुआ महसूस होता है और वजन कम करने में भी मदद मिलती है। सेम या ब्रॉड बींस दिल को बेहतर रखने के साथ-साथ ब्लड प्रेशर को कंट्रोल रखने में भी मददगार है। इसमें मैग्नीशियम और पोटैशियम होता है, रक्त वाहिकाओं को आराम देने में मददगार है। इससे आपका हाई ब्लड प्रेशर कम होता है। मैग्नीशियम और पोटैशियम से भरपूर खाद्य पदार्थ हाई ब्लड प्रेशर के रोगियों के लिए फायदेमंद होते हैं। इस प्रकार सेम हमारे यहाँ बहुत सुगमता से उपलब्ध होने वाली सब्जी है जो पौष्टिकता से भरपूर है।

सेवा, सहयोग देकर हम छोटे लोगों को भी अपनी तरह बना सकते हैं

- मुनिश्री सुदत्तसागर सागर जी महाराज

सागर। दीपावली पर्व पर जो असमर्थ लोग हैं उनको वस्त्र, फल, मेवा आदि वस्तुएं उपहार स्वरूप प्रदान कर उनकी मदद करनी चाहिए यह बात मुनि श्री सुदत्तसागर जी महाराज ने अंकुर कॉलोनी स्थित श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर में धर्म सभा को संबोधित करते हुए कही। मुनि श्री ने कहा कि प्रत्येक समाज अगर सेवा मदद सहयोग देकर कार्य करें तो हम छोटे लोगों को भी अपनी तरह बना सकते है और उनकी दीपावली में अपना समर्पण कर उनकी खुशी और अपनी खुशी दोनों बढ़ा सकते हैं। हर समाज में ऐसे परिवार मौजूद हैं, बस खोजने की जरूरत है। क्षुल्लक श्री चंद्र दत्त सागर जी महाराज ने कहा कि जो हमारे यहां कर्मचारी है उनकी जरूरत का भी ध्यान रखें। हमारी संपदा धन सब उनकी मेहनत का फल है इसलिए उन्हें खुश रखें। ऑफिस, दुकान, फैक्ट्री हर जगह स्टाफ को सहयोग एवं मदद करके उनकी दीवाली अच्छी तरह से मनवाएं। सबकी दीपावली अच्छी हो ऐसी कामना करें। आज अहिंसा अभियान के अंतर्गत अंकुर बाल विद्यालय में मुनि संघ का उद्बोधन हुआ और छात्र-छात्राओं ने पटाखों का त्याग करने का संकल्प लिया।

इंद्रियों-विषयों में सुख नहीं

1. स्पर्श इन्द्रिय के भोग में फंसकर हाथी गड्डे में गिरकर घोर बन्धन के दुःख भोगता हुआ अपने प्राण गवां देता है। 2. रसना इन्द्रिय के भोग में फंसकर मछली धीवर के फैलाये काँटे में फंसकर अपने प्राण गवां देती है। 3. घ्राण इन्द्रिय के भोग में फंसकर भौंरा सिकुड़ते हुए कमल में रह जाने से अपने प्राण गवां देता है। 4. चक्षु इन्द्रिय के भोग में फंसकर पतंगा दीपक की लौ में जलकर अपने आप को जला देता है। 5. कर्ण इन्द्रिय के भोग में फंसकर हिरण मधुर राग के वशीभूत हो जाने से शिकार हो जाता है अर्थात अपने प्राण गवां देता है। जब ये जीव एक-एक इन्द्रिय के वशीभूत होकर अपने प्राण गवां देते हैं तो यह विचारणीय है कि मनुष्य जो पाँच इन्द्रियों वाला है, उसकी दशा क्या होगी अर्थात इन्द्रियों के भोगों में लेश मात्र भी सुख नहीं है।

पाण्डिचेरी की आदरणीय श्रद्धेय श्रीमती कमला देवी जी कोठारी कालु प्रवासी का शांत परिणामों के साथ समाधिमरण

स्व. श्री मेघराज जी कोठारी कालुवालो की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी जी का ज्ञान एवं चेतना के साथ श्री वीर प्रभु का स्मरण करते हुए सभी आरम्भ परिग्रह, अन्न जल के त्याग के साथ आचार्य श्री सुविधि सागर जी, आ. श्री देवनन्दी जी महाराज, आर्यिका श्री सुयोग्यमति माताजी, श्री गुरू नन्दनी जी माताजी से विडियो काल के माध्यम से प्रांजल भैयाजी की साक्षात मौजूदगी में 20 अक्टूबर 2023 को 95 की उम्र में 7 बजकर 10 मिनट पर देह परिवर्तन हो गया। आप 15 वर्ष की आयु से ही आगम के अनुसार समस्त धार्मिक नियमों का पालन करती थीं, आपकी दिनचर्या ऐसी होती कि दूसरे भी आपके आचरण को देखें और जीवन में अपनाएं और उन्हें अपनाने की कोशिश करें। आपने 15 वर्ष की अल्प आयु से ही आगम अनुसार समस्त धार्मिक नियमों का पालन करते हुए दसलक्षण व्रत, सोलह साल तक सोलहकारण व्रत तथा हर महिने में एक उपवास आवश्यक रूप से, सूखे पानी से मजे बर्तनों में अष्टमी, चतुर्दशी को आहार एक बार लेती थीं एवं स्वास्थ्य अस्वस्थ होने पर भी उपवास करना है तो करना है। आपका देव, शास्त्र, गुरू के प्रति सच्चा श्रद्धान था। वह कभी भी कहीं और अपना मस्तक नहीं झुकाती थीं। आपकी इच्छा थी कि कभी भी आपको अस्पताल न लेकर जाएं एवं उनकी भावना थी कि वह बुढ़ापे में किसी को भी तकलीफ न देवें एवं उनकी वैकुटी निकाली जाए और मृत्यु को महोत्सव का रूप दिया जाए। वैसा ही आपके परिवार वालों ने किया एवं समस्त पाण्डिचेरी समाज ने एवं अग्रवाल, माहेश्वरी, ओसवाल सभी ने भरपूर सहयोग दिया, उसी से यह कार्य सम्पन्न हुआ। कोठारी परिवार सभी को तहे दिल से धन्यवाद देता है। कमला देवी जी स्वभाव से सरल, हंसमुख, संसार से उदास, धुनी, निराभिमानी, विवेकी, दृढ़ श्रद्धानी थीं। उनका यह दृढ़ श्रद्धान उनको मोक्षमार्ग में अवश्य प्रशस्त करेगा, उनके जाने से पाण्डिचेरी जैन समाज ने एक तत्वप्रेमी कोहिनूर हीरा खो दिया है। उनकी जैसी जीवन चर्या को आने वाली पीढ़ी को अवश्य अपनाना चाहिए यही हमारी उनके प्रति श्रद्धांजलि होगी।

-श्रीमती अर्चना भरत कोठारी, पाण्डिचेरी

16 वीं पुण्य तिथि

विनम्र श्रद्धांजलि

जन्म
19 मार्च 1929

स्वर्गवास
25 नवम्बर 2007

स्व. श्रेष्ठी श्री पूनमचन्दजी जैन गंगवाल

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा (राजस्थान प्रांत) के कई वर्षों तक अध्यक्ष रहे एवं महासभा के केन्द्रीय संरक्षक एवं उपाध्यक्ष पद पर पदासीन रहे धर्मनिष्ठ, मुनिभक्त, समाजसेवी पूज्य पिता श्री पूनमचन्दजी गंगवाल, झरिया वाले दिनांक 25.11.07 को जयपुर में आकस्मिक हम सभी को छोड़कर चले गये थे। आपने मृदुभाषी, मिलनसार, सरलता, देव शास्त्र गुरू के प्रति समर्पित आत्म कल्याण की जीवंतता जैसे सद्गुणों के साथ अपना आठ दशक का सार्थक जीवन जिया। आप वटवृक्ष की भांति भरे-पूरे परिवार की समस्त जिम्मेदारियों का सदैव, सदाशयता के साथ निर्वहन करते रहे। आपने समाज को गोम्मटेश्वर भ. बाहुबली स्वामी श्रवणबेलगोला की दो बार निःशुल्क यात्रा कराई। आपने अनेक संस्थाओं में पदासीन रहकर समाज की तन मन धन से सेवा की। सम-विषम परिस्थितियों में भी आदर्श मुखिया के नाते हमारे पथ प्रदर्शक बने रहे।
ऐसे प्रकाशपुंज ने अपने सद् आचार-विचारों से स्वयं, समाज और स्वजनों के जीवन को आलोकित किया।

आपके आदर्श और प्रेरणाएं हम सभी में अविस्मरणीय और चिरस्मरणीय बनी रहेंगी।
आपके बताये आदर्श ही अब हमारे भावी जीवन के लिये प्रेरणापुंज होंगे।

-: श्रद्धावनत :-

समस्त गंगवाल परिवार

www.cpil.com

CHANDRA PRABHU INTERNATIONAL LIMITED

CPIL-leading Trading house dealing into imported and domestic coal Expanding business in the fields of Vertical Farming, Conversion of Agro and municipal waste into Bio-energy and Town Planning in new Smart City Projects.

Registered Office -
14, Rani Jhansi Road, New Dehli-110055

-Corporate Office
522, 5th Floor, Galleria Tower, Gurugram-122009

South West
Pinnacle

SOUTH WEST PINNACLE EXPLORATION LIMITED

Reg. Off .
522, Fifth Floor, DLF Gallaria Commercial Complex,
DLF City Phase IV, Gurgaon 122009

Corp. Off.
Ground Floor, Plot No. 15, Sector - 44, Gurgaon 122003
(W) : www.southwestpinnacle.com (T) : +91-124 4235400, 4235401

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरूजी, बेटे की शादी को 2 वर्ष हुये है, मगर उसकी पत्नी को दौरे पड़ते हैं। 3 माह का बच्चा भी है, मगर वह बच्चे की परवाह भी नहीं करती-सुधांशु जैन, पीतमपुरा (दिल्ली)

उत्तर-कुंडली के अनुसार लग्न में सूर्य, चन्द्र, राहु बैठे होने के कारण ऐसा होता है।ग्रहण दोष का विधान करायें, लाभ होगा।

प्रश्न 2. परिवार को कलह बड़ी परेशानी बनी हुई है, कहीं भी मन नहीं लगता- रीमा, मुम्बई

उत्तर-श्री भक्तामरजी का 36वां काव्य मंत्रित यंत्र के सामने देशी घी का दीपक जलाकर सुबह-शाम 36 बार फेरें। घर से नेगेटिविटी दूर होकर शान्ति आयेगी।

प्रश्न 3. मेरी शादी को 12 वर्ष हो चुके है, मैं सरकारी जॉब तलाश कर रही हूं, क्या मेरी सरकारी जॉब लगेगी-निमिता जैन, बदायूं

उत्तर-निमिता जी आपकी सरकारी जॉब अवश्य लगेगी। आप माणिक्य रत्न का लॉकेट रविवार को धारण करें।

प्रश्न 5. बेटे का समय कैसा चल रहा है, वह अभी नौकरी करता है-अभिमन्यु जैन, रोहणी

उत्तर-अभिमन्यु जी, बेटे की कुंडली में बुध की भद्रा योग की दशा चल रही है, वह बहुत जल्द अपना व्यापार करेगा। सवा पांचरत्ती का पन्ना रत्न बुधवार को सीधे हाथ की सबसे छोटी अंगुली में चांदी में धारण करायें, लाभ होगा।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062, 8826755078

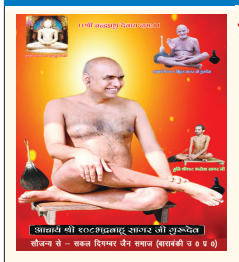

TATA PLAY 1086, dishtv 1109, DEN 266, 1217, 700 airtel, 842 hathway
आदिनाथ टी वी एवं अन्य सभी टीवी केबल पर उपलब्ध

आज का राशिफल
जैन ज्योतिषाचार्य
रवि जैन गुरूजी
द्वारा आदिनाथ चैनल पर प्रतिदिन
प्रातः 06:20 बजे
दोपहर 02:15 बजे
संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद् (पंजी.)
विवाह, मकान, व्यापार, संतान, प्रमोशन, परीक्षा, विदेश यात्रा आदि समस्याओं का समाधान जैन आगम के अनुसार प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें :
1/6991, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली - 32
M. 011 22325069, 9990402062, 8826755078

आचार्य भद्रबाहू सागर जी महाराज की अनमोल वाणी

संयम, त्याग, सदाचरण से मोह कम होगा, आत्मा में ज्ञान सूर्य का प्रकाश होगा

गलत व्यक्ति कितना भी मीठा बोले एक दिन आपके लिए बीमारी बन जायेगा, अच्छा व्यक्ति कितना भी कड़वा लगे एक दिन औषधि बनकर काम आयेगा

अनुभवी की बात न मानने से अनुभव से सीख लेनी पड़ती है, यह सत्य है

दीपचन्द गंगवाल, बाराबंकी
श्रीमती नीता जैन, बाराबंकी
श्रीमती अनिता जैन, बाराबंकी
श्रीमती आशु जैन, बाराबंकी
मुदित जैन, प्रयागराज
दिलीप जैन, प्रयागराज ...
महेश जैन, बोदेगांव (महा.)
राकेश जैन, परभनी (महा.)
तुषार मनोज कुमार चौबाकर, परभनी महा.
प्रकाशचन्द्र साउजी, अम्बड़ (महा.)
दिलीप दोषी, मुम्बई (महा.)
सुनिल हीराचन्द दोषी, अकलूज (महा.)

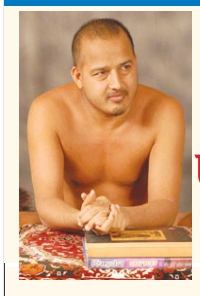

परमपूज्य 108 प्रज्ञापुंज, धर्म प्रभावक, अतिशय योगी आचार्य श्री भद्रबाहू सागरजी महाराज का चातुर्मास बाराबंकी (उ.प्र.) में सानंद चल रहा है।

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
DHAN KUMAR KOTHARI
M : 09810667754
SANJAY JAIN KOTHARI
M : 09435040533
KUNAL KOTHARI
M: 09560569111
KARAN KOTHARI
M : 9999887667
AUTOMOBILE CARRIERS
Your Logistic Partner
GUWAHATI :
5A, Mahabir Market, Fancy Bazar, Guwahati-781001, Assam
Email : automobilecarriers1@gmail.com
GURGAON :
S.No. 35, Opp. Maruti Gate No. 2, Old Delhi Gurgaon Road
Gurgaon-15, Haryana Email : sanjayjain@automobilecarriers.co.in
Web : automobilecarriers.co.in
Web : automobilecarriers.co.in
Authorised Carriers for :
MARUTI SUZUKI, Mahindra Rise, HYUNDAI New Thinking. New Possibilities., Hero, HONDA, YAMAHA, BAJAJ, SUZUKI, HONDA

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
WITH BEST COMPLIMENTS FROM
Padam Chand Jain (Dhakra)
(Vice President-Shri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha)
Mahendra Kumar Jain (Dhakra)
(Working President- Shri Bharatvarshiya Digamber Jain
(Teerth Sanrakshini) Mahasabha T. N. Branch
Pradeep Commercial Interprises
(Iron & Steel Merchants)
56, Sembudoss Street, 2nd Floor, P. B. No 8343, Chennai-600 001
Phone No. 25228522, 25220032 Off. 25206812, 25202601 Resi.
Mobile : P. C. Jain-9444918024 M.k.Jain-9444028522
ASSOCIATE :
Shanti Enterprises
Banglore 080-25266482, Mob. : 09448092260

सौरभ सागर वचन

कभी-कभी आपकी एक मुस्कान मरूस्थल में जल की एक बूंद जैसी लाभदायक सिद्ध हो सकती है

-: नमनकर्ता :-

- राजूलाल जी बैनाड़ा, जयपुर
- श्रीमती स्नेहलता सौगानी, जयपुर
- दिनेश चन्द कासलीवाल, जयपुर
- नीरज जैन, जयपुर
- श्रीमती रत्ना जैन(सुरजमल विहार, दिल्ली)
- श्रीमती ऊषा जैन, आगरा
- रमेश चन्द तिजारिया, जयपुर
- धर्मचंद पहाड़िया, जयपुर
- कुशल ठोल्या, जयपुर
- जोहरी बाजार दिगम्बर जैन महिला समिति
- प्रदीप जैन, मेरठ
- सारिका जैन, मेरठ

ज्ञानयोगी, संस्कार प्रणेता, जीवन आशा हॉस्पिटल प्रेरणास्रोत आचार्य सौरभ सागर जी का शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, प्रतापनगर सेक्टर 8 में चातुर्मास सानंद चल रहा है।

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009
कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000
महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132
कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985
प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com
परामर्शक सदस्य
शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी
मो. 09219160350
सुरेश जैन 'सरल', जबलपुर
मो. 09425412374
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334
सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com
सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108
लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344
दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से
कोरियर से मंगाने पर
अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र.
रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 9415108233
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

जिनके पास मीठी जुबान होती है, उन्हें हीरे मोती पहनने की जरूरत नहीं होती है- आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज

शत् शत् नमन
शत् शत् वंदन
आचार्य श्री ससंघ उदयपुर में विराजमान हैं। आपका चातुर्मास उदयपुर में हो रहा है।

परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में
शत् शत् नमन्

-: नमनकर्ता :-

प्रकाशचन्द - सरला देवी पाटनी
निवासी सुजानगढ़ प्रवासी शिलांग

नवरतनमल श्यामनगर जयपुर (अष्टम प्रतिमाधारी)

इन्द्रमणी देवी चूड़ीवाल धर्मपत्नी स्व. आनन्दीलाल जी चूड़ीवाल निखार फैशन्स, जयपुर

सुन्धासु कासलीवाल जयपुर

राजेन्द्र कटारिया अहमदाबाद

श्रीमती रत्नप्रभा सेठी गुवाहाटी

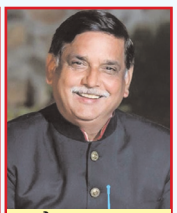

सुरेश सबलावत जयपुर

संजय पापड़ीवाल मदनगंज-किशनगढ

महावीर बोहरा जोधपुर

प्रेमचंद सेठी मेड़ता रोड (राज.)

अशोक कटारिया (निवाई वाले)

श्रीमती इन्द्रमणी देवी बाकलीवाल, सिल्चर

श्रीमती कंचन देवी विनायक्या
निवासी सीकर प्रवासी सूरत

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

कर्मो के नाश से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है

- अनार्मना आचार्य प्रसन्न सागर

उदगांव। कुंजवन तीर्थ पर चातुर्मास कर रहे अन्तर्मना श्री प्रसन्नसागर जी महाराज के ससंघ सानिध्य में लघु सिंहनिष्क्रीडित व्रत करने वाले व्रतियों का महापारणा अत्यंत भव्यता के साथ अपार जनसमूह के बीच सम्पन्न हुआ। उपाध्याय श्री पीयूष सागर, मुनि श्री अप्रमत्त सागर, मुनि श्री परिमल सागर, क्षुल्लिका वचनप्रभा माताजी के साथ ही भिंड के श्रावक श्री मनीष जी व मैनपुरी की श्राविका श्रीमति साधना जैन ने ये व्रत सफलता पूर्वक पूर्ण किये। गृहस्थ में रहते हुए ये व्रत करने वाली साधना जी विश्व में वर्तमान में अकेली महिला है। सर्वप्रथम कुंजवन में एक विशेष पूजा का आयोजन हुआ फिर मुनिसंघ व जिनप्रतिमा के सहित एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई जो गांव के मंदिर जाकर पुनः वापिस कुंजवन पहुँची

जहां जिनाभिषेक के बाद सभी व्रतियों ने आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन किये व फिर संघस्थ व्रतियों के पाद प्रक्षालन किये गये। पिच्छि व शास्त्र भेंट के बाद गुरुपूजन हुई। इस अवसर पर अन्तर्मना ने कहा कि मोक्ष कर्म नाश से ही होता है व कर्म काटने के लिए तप व्रत ही एक मात्र साधन है। इन व्रतियों ने महान तपस्या कर अपने अनंत अनंत कर्मों की निर्जरा की है। इसी तारतम्य में संघस्थ वर्णी गुरु ने कहा कि विश्व की 800 करोड़ आबादी में एक मात्र कोई पवित्र आत्मा है वह प्रसन्न सागर गुरुदेव है जो उनके दर्शन भी कर ले वह निकट भव्य जीव है। आयोजन में व्रतियों के पड़गाहन के बाद आहार चर्या हुई जिसमें लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। सभी ने विधिवत आहार दिया व भारी जय-जयकार किया। इस अवसर पर 22 दिसम्बर से आयोजित हो रहे कुंजवन महोत्सव का 1000 रुपये के कूपन का विमोचन किया गया। मनीष जी ने व्रत साधना से प्रभावित होकर रात्रि में चारों प्रकार के आहार व रंगीन कपड़े पहनने का त्याग किया व मुनिदीक्षा का श्रीफल अर्पित किया। क्षुल्लक सहज सागर, पण्डित दीप चंद्र व साधना जी ने भी दीक्षा हेतु श्रीफल अर्पित किये तत्पश्चात समस्त संघ की आहार चर्या हुई। पधारे सभी अतिथियों की भोजन व्यवस्था भी रही। अभूतपूर्व कार्यक्रम कुँजवन में सम्पन्न हुआ जिसमें देश भर के लोग पधारे। संघपति दिलीप जी बड़ोदा, उपसंघपति श्रवण जी नागपुर, नितेश, सुनील, शैलेंद्र जैन इचलकरंजी, आकाश जी सोनकच्छ, डॉ. संजय-इंदौर, विवेक गंगवाल-कोलकाता, डॉ. सौरभ जैन मैनपुरी, हल्दी परिवार-नांदेड़, प्रमोद मामा जी, सतेंद्र भाई, रमेश जी विलासपुर, प्रबीन जी माधवपुर, सन्मति मंडल उदगाव, ब्रह्म पुरातन ट्रस्ट कुंजवन आदि का विशेष सहयोग रहा। **-नरेंद्र अजमेरा/पियुष कासलीवाल, संवाददाता**

दुःखों से मुक्ति चाहते हो तो संयम धारण करो

- आचार्य श्री विमर्श सागर जी

जतारा (टीकमगढ़)। चाहे तन के दुःख हों, मन के दुःख हों, चाहे चेतन के दुःख हों। जीव मात्र मुक्ति चाहता है। आपका पुरुषार्थ तन के दुखों को दूर करने के लिए विशेष रहा करता है। सुबह से शाम तक आपकी प्रत्येक क्रिया तन के दुःखों को दूर करने की ही रहा करती है। तन के दुखों में प्रमुख रूप से प्रतिदिन भूख और प्यास का दुःख हमारे समक्ष उपस्थित होता है जिसका प्रतिदिन समाधान करना भी आवश्यक है। एक बार व्यक्ति भूख की वेदना कुछ समय के लिए सहन कर लेगा लेकिन प्यास की वेदना मिटाने को जल आवश्यक है। वर्तमान जीवन शैली अत्यंत विलक्षण होती चली जा रही है। एक गृहस्थ को ब्रह्म मुहूर्त में जाग जाना चाहिए किन्तु आज ब्रह्म मुहूर्त में तो आज के गृहस्थ शयन करने की तैयारी करते है और जब घर के बड़े- बुजुर्ग लोग भोजन

आदि क्रिया से निवृत्त हो जाते है तब आपके उठने का, जागने का समय होता है। ध्यान रखना, जो प्रातःकाल घर का बिस्तर नहीं छोड़ता, उसे अपने घर का बिस्तर भी नसीब नहीं होता, ऐसे लोगों के लिए तो अस्पताल - हॉस्पिटल का ही बिस्तर प्राप्त होता है। जो सूर्योदय होने के बाद जागता है वह राक्षस कहलाता है, अब आप स्वयं अपने घर में देख लेना कि आपके घर में कितने राक्षस है। आप जीवन में उपलब्धियाँ - प्रतिभायें प्रगट करना चाहते है तो आप ब्रह्ममुहूर्त में जागना प्रारंभ कर दीजिए, सफलतायें स्वयमेव आपके द्वार पर दस्तक देंगी। जैन धर्म में तीर्थंकर भगवान के बाद गणधर परमेष्ठी को ही सर्वप्रथम याद किया जाता है। आचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज ने बड़ौत चातुर्मास-2014 में अपने 11 शिष्यों को भगवती जिन दीक्षा प्रदान की थी। जिनमें से 9 संयमी शिष्यों ने अपने दीक्षा प्रदाता आराध्य गुरुवर की पूजा-आराधना एवं विनयांजलि समर्पण द्वारा गुरु चरणों में बैठकर ''गुरु उपकार दिवस'' मनाया। उन 11 संयमी में से 2 शिष्य साधना के फल स्वरूप उत्तम समाधि प्राप्त कर चुके है। ज्ञातव्य हो पू. आचार्यश्री ने सर्वप्रथम 7 आर्यिका दीक्षायें 6 नवम्बर 2014 को बड़ौत शहर में ही प्रदान की थीं। सभी शिष्य समुदाय के साथ भक्तों ने भी मनाया 10वां गुरू उपकार दिवस। धर्म सभा में हरिश्चंद्र जैन, पवन रानीपुर, राजीव मोदी, मुकेश जैन, राजेंद्र राज, जतारा के श्रावकों के साथ-साथ टीकमगढ़, आगरा, गाजियाबाद के भी भक्तगण मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन पत्रकार अशोक कुमार जैन द्वारा किया गया।

प्रथमाचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज का दीक्षा शताब्दी महोत्सव 7 जनवरी को जयपुर में मनाया जाएगा

दिलीप जैन

जयपुर, 5 नवम्बर। देश की सर्वोच्च साध्वी गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज का शताब्दी दीक्षा महोत्सव देशभर में एक वर्ष तक विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाया जाएगा। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जैन ने अवगत कराया कि 5 नवम्वर दोपहर 1 बजे युवा परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन की अध्यक्षता में प्रदेश पदाधिकारियों व शाखा अध्यक्षों की संयुक्त मीटिंग श्री आदिनाथ भवन गायत्री नगर महारानी फार्म जयपुर में हुई। युवा परिषद् प्रदेश पदाधिकारी की मीटिंग में यह निर्णय लिया गया कि उक्त दीक्षा महोत्सव 7 जनवरी को राष्ट्रीय स्तर पर युवा परिषद् के 47 वें स्थापना दिवस समारोह के पावन अवसर पर जयपुर महानगर में मनाया जायेगा, जिसमें समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, विभिन्न प्रांतों से युवा परिषद् की शाखाओं के पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित रहेंगे। मीटिंग में युवा परिषद् के प्रदेश महामंत्री बिमल बज, प्रदेश संस्कृतिक मंत्री सुनीला बाकलीवाल, कशवी जैन, प्रदेश संयुक्त मंत्री श्रद्धा जैन एवं युवा परिषद् मानसरोवर संभाग के अध्यक्ष अशोक जोला, संरक्षक सतीश कासलीवाल, जयपुर हेरीटेज के अध्यक्ष रुपेन्द्र जैन एवं महामंत्री नरेश छाबड़ा आदि पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

नंदीश्वर महामंडल विधान संपन्न

रमेश चंद्र जैन एडवोकेट

नई दिल्ली। श्री दिगंबर जैन मंदिर निर्माण विहार में मुनि श्री शिवानंदजी व प्रशमानंदजी के सान्निध्य में तीन दिवसीय भव्य नंदीश्वर महामंडल विधान का आयोजन किया गया। भव्य और आकर्षक मांडले पर 52 प्रतिष्ठित प्रतिमाओं के साथ 5 अन्य प्रमुख प्रतिमाएं भी विराजमान थीं। विधान में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। विधानाचार्य पंडित विजेंद्र जैन शास्त्री, देवेंद्र नगर (म. प्र) एवं आशीष जैन छतरपुर ने भक्ति संगीत के साथ अदभुत समां बांध दिया। महती धर्म प्रभावना हुई। नई दिल्ली जैन सभा युसूफ पार्क के संयोजन व आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के सान्निध्य में कमल सिनेमा पार्क एन्क्लेव में पांच दिवसीय समवशरण महार्चना का आयोजन किया गया जिसमें वर्तमान 24 तीर्थंकर और विद्यमान बीस तीर्थंकरों के समवशरण की 45 समवशरणों की मंगलमयी प्रतिकृति विराजमान की गई थी। साथ ही विश्व शांति महायज्ञ का आयोजन भी किया गया। घटयात्रा के बाद रोजाना प्रेरक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। पूरे क्षेत्र में इस भव्य आयोजन से महती धर्म प्रभावना हुई। आचार्य संघ का पिच्छी परिवर्तन भी हुआ।

स्वाधिकारी श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचंद्र गुप्ता द्वारा हिंदुस्तान मीडिया वेंचर्स लिमिटेड, विभूति खंड, गोमती नगर लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर पलॉर मिल कंपाउंड मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ 226004 उ प्र. से प्रकाशित, संपादक सुधेश कुमार जैन

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92
Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on Every Monday, wednesday and thursday
डाक पंजीयन संख्या : SSP/LW/NP/115/2021-2023

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh, Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233, 7505102419 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
.....
.....
.....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-, दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।